आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 11 | उदयपुर शुक्रवार 15 जून 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

अब कहां जंवाइयों से जुड़े वैसे लाड़, रंजन और मसखरीपन

बमुश्किल आधी शताब्दी का वक्त गुजरा है ; देखते-देखते वे सारे संस्कार हवा हो गये जो विवाह के बाद प्रथम दीवाली मुकलावे पर जंवाईराज के साथ उसके सुसराल में देखने को मिलते थे। मेवाड़ प्रदेश में यह मुकलावा आणा नाम से जाना जाता। दीवाली के मौके पर नवोढ़े जंवाई को नूता जाता।

पन्द्रह दिन से लेकर महीना भर तक जंवाई सुसराल में बड़े लाड़-प्यार और राग-रंग से रहता। खूब मान-मनुहार और खातीरदारी होती। नित नये-नये, भांत-भांत के पकवानों का भोजन ; बत्तीसी भोजन तैतीसी तरकारियों का थाल परोसा जाता। भोजन के समय दोनों वक्त जंवाईराज को रिझाने के लिए नानाप्रकार के गीतों-गाळों का आनन्द-ठाठ बना रहता।

इस अवसर पर सुसराल पक्ष की महिलाओं द्वारा जंवाईजी की बौद्धिक क्षमता की परीक्षा ली जाती। पग-पग पर जंवाई को बड़ी चतुराई और होशियारी से अपने ज्ञान की गुंडी खोल अपना दबदबा दिखाना होता। परीक्षा लेने वाली महिलाएं होतीं। इनमें जंवाई की साला-हेलियां अर्थात् सालों की पत्नियां, सालियां अर्थात् पत्नी की बहिनें, पत्नी की सखी-सहेलियां तथा पास-पड़ौस की युवतियां होतीं। ये किसी पहेली के माध्यम से प्रश्न रखतीं जिसका उत्तर देकर जंवाई को वह पहेली छुड़ानी पड़ती।

ऐसी पहेलियां अनेक-असंख्य होतीं। कुछ तो उन्हें परम्परागत सीख में मिली होतीं और कुछ उनमें कल्पनाशक्ति तथा तीक्ष्ण बुद्धि वाली रचनाशक्ति से तत्काल उपजतीं लगतीं। जंवाई अपने घर से प्रस्थान करने से पूर्व अपने गृह-परिजनों, माता-बहिनों, समधियों आदि से भलीप्रकार प्रशिक्षित होकर जाता। महिलाएं पूरी भलावण देती कि पूरी होशियारी से हर समय सजग रहना। किसी तरह से नीचा नहीं देखना पड़े, यह ख्याल रखना।

महिलाएं लज्जाशील होती हैं इसीलिए नारी का महत्व और उसकी विशेषता ही लजवंती होना कहा गया है किन्तु जब वे उन्मुक्त हो जाती हैं तब उन्हें बांध पाना मुश्किल हो जाता है जैसे पानी को बांधना अति दुष्कर कहा गया है बल्कि कहा तो यहां तक गया है कि सबको बांध पाना सम्भव है पर पाणी और वाणी अमर्यादित होने पर लाख कोशिश करने पर किसी के बांधे नहीं बंधती।

कहने वाले ने नारी को लपेटे में नहीं लिया पर सुसराल में उसकी मुक्तता देखते ही बनती है। वे हर उस प्रसंग की प्रतीक्षा की टोह में रहती हैं और जंवाई को बांध देती हैं। भोजन के समय ग्रास लेते जंवाई को पहेली द्वारा बांध देती है और उसी लहजे में उत्तर देने पर ही जंवाई बंधन मुक्त हुआ समझा जाता है। जंवाई कहता है-

मैदो को सीरो कर्‌यो, पूड़ी करी पचास।
बांधू थारो घूम घाघरो, छोड़ो म्हारो गास।।

जब जंवाई पानी पीने लगता है जो सालाहेली पानी बांध देती, इस पहेली से-

कोरो करवो कंकू वरणो, रात रह्‌यो रोही में निरणो।
चाब्यो पान उगाली घाणी, म्हैं बांध्यो मरदां को पाणी।।

चुलबुले जंवाई को पानी छुड़ावन हेतु उत्तर में कहना पड़ता है-

बैठ रूंख पर मैना बोले, बोलत डार पिछाणी।
सालीजी को हर्‌यो ओढ़णो, छूट्‌यो म्हांको पाणी।।

भोजनोपरांत सभी स्त्रियां एक कमरे में एकत्र हो जातीं तब जंवाईजी को भी वहां बैठने के लिए कहा जाता। जब वे बैठने लगते, औरतें उन्हें सभी के लिए गादी ढालने को कहतीं। जंवाईजी को अपना बुद्धि-चातुर्य दिखाते गादी देने की बुझोवल सुनानी पड़ती-

गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो गढ़ है बीकाणेर।
भली बसाई भाटिया, गढ़ है जैसलमेर।।
बीकाणा को ढोलियो, घड़्‌यो घट स्यूं घाट।
घड़्‌यो पण बुण्यो नहीं, बुण्यो पीले पाट।।
पागा ज्यारा सावणा, सुपार्‌यां ईसवार।
सातां ने सतरंज द्‌यां, सोला ने सिणगार।।
बत्तीसां ने बैठणो, छत्तीसां ने हार।
आई तो हजार करो, न्हीं तो करो उधार।।
गादी पाट पटम्बर की, गादी रेशम तणियांह।
गादी राजा भोज की, बैठो सब जणियांह।।

गादी देने पर तकिया की फरमाइश चलती। तकिया देने पर उसकी ढोलणी अर्थात् पलंग बांध दिया जाता। जंवाई ऐसे माहौल में हाबल्या-काबल्या हो जाता। ढोलणी छुड़ाने की कोशिश में जंवाई को वीजरवाया देख औरतें प्रश्नों की झड़ी लगा देती। जंवाई इन प्रश्नों को सुन सकपका जाता। कुछ प्रश्न तो सुनने में ही नितान्त अश्लीलपरक मसखरी लिए होते। औरतें तो कई होतीं सो बेझिझक कह पड़तीं पर जंवाई तो उनके सामने हिचकिचाता ही और नवोढ़ा होने से संकोच तथा झिझक लिए रहता। उत्तर आने पर भी कहने में लज्जित हुआ महसूस करता तब भी वह मायूस नहीं होकर हिम्मत रख उस कठिन दौर से अपनी नाक ऊंची किये पूरे दमखम से उत्तर देता और सबको निस्तेज किये रहता। ऐसा भी होता जब जंवाई भी उन पर हावी होकर उनकी तरह ही उनसे प्रश्न-दर-प्रश्न पूछ बैठता। सालाहेलियों संग प्रश्नोत्तरी चलती-

प्रश्न : 'जंवाईजी थांके घर मांहें चतुर कुण?'
उत्तर : 'बुवारी सा'
प्रश्न : 'मूरख कुण?'
उत्तर : 'मूसलो सा'
प्रश्न : 'थांकी धोती में कांई?'
उत्तर : 'लांग सा'

जंवाई द्वारा पूछित प्रश्न -

प्रश्न : 'सालीजी थांकी कांचली में कांई?'
उत्तर : 'टूंकियां नै तना सा'
प्रश्न : 'थांकै घाघरा में कांई?'
उत्तर : 'नाडो सा'
प्रश्न : 'थांकै ओढ़णे में कांई?'
उत्तर : 'निजर सा'
प्रश्न : 'थैं राजी किणसूं रैबो?'
उत्तर : 'काजल टीली सूं सा'

सालाहेलियों द्वारा पूछित प्रश्न -

पैल सखी उठ बोली यूं-
'दोन्यू फाड़ बरोबर क्यूं?'
दूज सखी उठ बोली यूं-
'काला केस बरोबर क्यूं?'
तीजी सखी उठ बोली यूं-
'बीचै काळी टीकी क्यूं?'
चौथ सखी उठ बोली यूं-
'चोट लगै जद टपकै क्यूं?'

यह पारसी सुन जंवाई बेथाल हो गया। पारसी तो कहने को एक है पर प्रश्न चार हैं जिनके उत्तर चार नहीं होकर एक है। वह मन ही मन अपने कुल देवता का स्मरण करने लग गया और मां की खीस याद आ गई कि मुसीबत आने पर घबराना नहीं, देवता सहायता करता है। सालाहेलियां मन ही मन इसलिए प्रसन्न थीं कि जंवाई सा के निरूत्तर होने पर उनकी अच्छी चकबांध देंगी और मन चाहा इनाम लेने पर ही उन्हें मुक्ति देंगी।

इतने में जंवाईराज के मुख मण्डल पर मुस्कान की रेख चमकी। उन्होंने उत्तर दिया- 'आंखड़ली सा।'

पारसियों की जानकारी के दौरान 13 जनवरी 1968 को उदयपुर की गणेशघाटी निवासी छाबदार भगवानजी गहलोत ने ढोल्या छुड़ावन की पारसी लिखाई-

काली ईस बसल का पागा, ढोल्यो घड़तां नव दन लागा।
ढोल्यो घड़ियो बिस्वाबीस, साल्यां बांधी पूरी तीस।
पांच सात सेहेल्यां बांधी, सौ पणघट को कुवो
आस बांधी वास बांधूं, बांधूं घर के ताई
इतरो छुड़ा के फेर गावो थें बड़ा सगा की जाई

उन्हीं के पास बैठे उदयप्रकाश गहलोत ने गादी छुड़ावन की पारसी बोली-

हाथ लाल, पग लाल, छल्ला बींटी छिबदार
नाऊ सरकार की बेटी, पाका माथे पग धोवे
चतुर लुगाई है राजा जसवंतसिंह की गादी मांगन आई
गादी गुद गुजरात की सीमाई अजमेर
मोती लागा मेड़ते हीरा जैसलमेर
केवै पन्ना की छोड़की गादी दीजै सार
आज पधारे पाहुणा वाजै राजकुमार

ऐसे ही जल छुड़ावण, थाल छुड़ावण, राह छुड़ावण, ढोल्यो छुड़ावण, जाजम छुड़ावण, सेज छुड़ावण, बाटको छुड़ावण, हुक्को छुड़ावण जैसी पारसियों का भंडारा मिलता है।

उल्लेखनीय है कि पारसी-पहेली के अन्य नामों में बुझौवल, उलटबांसी, मुकरी, पहाली, प्हाली, ढकोसला, होसला, आड़ी, हियाली कहमुकरकी, गूढ़ा जैसे और भी नाम प्रचलित हैं।

अनाम रचनाकारों के नाम

लोकसाहित्य पानी की तरह अथाह है। पानी को जैसे कोई बांध नहीं पाता है वैसे ही लोक में प्रचलित साहित्य को कोई नहीं बांध पाया। पृथ्वी पर जैसी पानी की सत्ता और महत्ता है वैसी ही लोकसाहित्य की प्रभावना देखने को मिलती है। प्रलय के नाम पर हमारे यहां खण्ड प्रलय तो कई हुए पर महाप्रलय कभी नहीं हुआ, उसी प्रकार लोक में साहित्य की जो धारा निरन्तर प्रवाहमान रही, उसमें कई उतार-चढ़ाव आये परन्तु यह धरा कभी सूखने नहीं पाई।

लोक में रचित साहित्य हमारे यहां अनाम ही अधिक रहा है। नाम दे भी दिया तो वह अनाम ही है। रचियता का उसका कोई और ही है। जैसे नदियों में अनेक नद नाले गिरकर अपना नामधारी अस्तित्व मिटा देते हैं, समुद्र में नदियां गिरकर जैसे अपना नाम विस्मृत कर देती है वैसे ही साहित्य के रचनाधर्मी साहित्य रच-रच कर समाज के अथाह समुद्र में अपना लोपण करते रहते हैं। अपने अस्तित्व का यह विलीनीकरण, यह समर्पण भाव ही हमारी संस्कृति का मूल भाव है। यही कारण है कि व्यक्ति अपना कोई नाम होते हुए भी अपने को बेनामी-अनामी ही बनाये रखना चाहता है। जब किसी से उसका नाम पूछा जाता है तो उसका यही उत्तर मिलेगा 'नाम तो श्री भगवान का। नाम तो रामजी का, श्रीकृष्णजी का। मेरा क्या नाम! मुझे भगवान्या कहते हैं। रामल्या कहते हैं। किशन्या कहते हैं।'

साहित्य के क्षेत्र में भी ऐसी नामधारी, अनामधारी, छापवाली, बिना छापवाली रचनाएं अगणित मिलती हैं। ऐसी संख्यातीत रचनाएं कई रूपों और कई विधाओं में मिलती हैं।

यही कारण है कि व्यक्ति अपना कोई नाम होते हुए भी अपने को बेनामी-अनामी ही बनाये रखना चाहता है। जब किसी से उसका नाम पूछा जाता है तो उसका यही उत्तर मिलेगा 'नाम तो श्री भगवान का। नाम तो रामजी का, श्रीकृष्णजी का। मेरा क्या नाम! मुझे भगवान्या कहते हैं। रामल्या कहते हैं। किशन्या कहते हैं।'

-शेष पृष्ठ चार पर

स्मृतियों के शिखर (54) : डॉ. महेन्द्र भानावत

'रावणहत्था' की कवयित्री डॉ. सुधा गुप्ता

अपने-पराये किसी सुधीजन को याद करने का कोई वक्त था जो अब जैसे किसी चट्टान से रपट गया है। ऐसे में हमारे ही बीच की डॉ. सुधा गुप्ता को भी, लगता है हम लोग भूल गये हैं। दूसरों से बहुत सारी अपेक्षा न भी करें तो घरवाले भी अपने प्रियजन को याद नहीं कर पाते हैं। पहली जून 1944 को जन्मी सुधा 9 नवम्बर 1987 को चल बसीं।

याद करता हूं तो मृत्यु के दो दिन पूर्व नंद बाबू ने मुझे फोन पर कहा था, 'महेन्द्र, दीवाली का रामासामी करने चलना है। संध्या को सुधा से और फिर शलभजी के घर चल आयेंगे।' निश्चित समय में नंदबाबू को अपनी स्कूटी पर बिठाये सुधाजी के वहां सुन्दरवास पहुंचे। घंटी बजाई तो नंद बाबू ने कहा-'सीधे ही चलो न! यहां भी घंटी-वंटी की जरूरत पड़ेगी क्या?' मैंने कहा, 'ऊपर है भी या नहीं, यह तो पता कर लें।'

ऊपर से उनके अग्रज एस. बी. गुप्ता बोले, 'सुधा तो नहीं है, हॉस्पिटल है।' मैंने कहा, 'हम अभी शलभजी से मिलकर आ रहे हैं तब तक सुधाजी भी लौट आयेंगी।' उन्होंने कहा, 'सुधा खुद हॉस्पिटल में बीमार है। कल ही भर्ती कराई है।' यह सुन हमारा खिला-मुस्कराता चेहरा धत्त-धड़ाम हो गया। नंद बाबू रुंआसा स्वर लिये बोले, 'अब शलभजी के वहां भी क्या जाना है। चलो, सीधे हॉस्पिटल चलते हैं।'

अचानक यह सब सुन मन में बहुत सारे ऊहापोह, द्वन्द्व तथा उठापटकी झूंझल लिये हम हॉस्पिटल के जनरल वार्ड में पहुंचे जहां बेड पर तड़फती सुधा ने पलभर हमें देखा। उसकी घबराहट बढ़ती जा रही थी। सेवा में सुधाजी की छोटी भाभी कृष्णा, मां और लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के सेवक संत सरजुदासजी थे। सुधाजी ने बड़ी मुश्किल से हमारी तरफ देखा, तनिक उठने की चेष्टा की लेकिन फिर गुर्दीद हो गई। कोई किसी से बोल नहीं रहा था। किसी भी तरफ देख नहीं रहा था। नंदजी ने हिम्मत की। बोले, 'सुधा! अभी सोओ, आराम करो। कल आयेंगे। मिलेंगे और कविताएं भी सुनेंगे।' हम चल पड़े।

अस्पताल में सुधाजी की हालत नाजुक से अति नाजुक देखी। दूसरा दिन भी वह नहीं निकाल सकी। सरजुदासजी पलभर भी सुधाजी से विलग नहीं हुए। अध्यात्म के रिश्ते में सुधाजी ही मीरां का सातवां जन्म लिए थी। डाक्टरों ने सुधाजी में खून की कमी होना बताकर सारा खून मीरां गर्ल्स कॉलेज की बालाओं से लिया। पता लगा कि ऐसी 23 बालिकाएं उन्हें अपना रक्त देने के लिए वहां उपस्थित थीं। इससे एक आदर्श और सबकी हम चाह गुरुआणी, सुधाजी की लोकप्रियता का पता चलता है। आगे मैं क्या सुनता और क्या बोलता।

ठीक से तो याद नहीं पर सन् 1980 के आसपास पहलीबार सुधाजी मुझे लोकदेवता कल्लाजी की गादी पर ले गई। यह गादी उदयपुर में मेरी भाणजी-जंवाई रोशनलालजी बाबेल के घर ही लगी हुई थी। वहां सबसे पहले सेवक सरजुदासजी के भाव में मैंने कल्लाजी के दर्शन किये और फिर तो ऐसा सिलसिला बैठा कि मैं उनसे जुड़ता ही गया। यह जुड़ाव ही मुझे अध्यात्म की ओर ले गया जिससे मैं नितांत अनजान बना हुआ था।

फिर तो मुझे मीरांबाई पर पुस्तक लिखने के लिए उन लोकदेवता ने सारे स्थानों का प्रत्यक्षदर्शी बनाया जहां-जहां मीरांबाई का जन्म से लेकर अंत तक भ्रमण-परिभ्रमण रहा। वहीं मुझे पता चला कि कल्लाजी राठौड़ की मीरांबाई सगी भुआ थी। हम लोगों ने राजस्थान सहित छह प्रांतों का भ्रमण किया। यह भ्रमण-यात्रा अलग-अलग समय में सन् 1985 से 1987 तक रही। गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु की इन यात्राओं में सरजुदासजी के साथ मैं और सुधाजी के अलावा कभी मेरी आत्मजा कविता और कभी आत्मज मुक्तक रहे।

इस यात्रा विषयक आलेख दैनिक हिन्दुस्तान, रंगायन, संस्कृति दर्शन, जनसत्ता आदि पत्रों में छपे। मुम्बई से प्रकाशित दैनिक महानगर में उसके प्रधान सम्पादक अनुराग चतुर्वेदी ने तो धारावाहिक रूप में पूरी पाण्डुलिपि का ही प्रकाशन कर दिया। पुस्तक रूप में इसका प्रकाशन 'निर्भय मीरां' नाम से 1994 में हुआ तब तक सुधाजी और मुक्तक दोनों हमारे बीच से हमें छोड़ स्मृतिशेष हो गये। यह पुस्तक भी उन्हीं को समर्पित की गई।

सुधाजी विवाह के बन्धन में नहीं बंधी। वह अर्थशास्त्र और हिन्दी में एम. ए. थीं। उन्होंने छायावादोत्तर काव्य में शब्दार्थ का स्वरूप विषय लेकर पीएच. डी. की उपाधि ली और फिर स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य-शास्त्रीय विवेचन नामक शोधप्रबन्ध लिखकर डी. लिट् बनीं।

वे मूलत: कवयित्री थीं। पहली कृति अनचिन्हा परिवेश नाम से छपी फिर क्रमश: चेतना के फूल, रोशनी की शहतीर, ऋतुओं की भाषा तथा अंधेरे के जुबान नहीं होती नामक काव्य संग्रह प्रकाशित हुए।

सुधा गुप्ता की कविताओं के मिजाज को समझने के लिए अंधेरे के जुबान नहीं होती पुस्तक की भूमिका में नंद चतुर्वेदी ने शुरूआत यों की-'सुधा गुप्ता हिन्दी की महत्वपूर्ण कवयित्री हैं। समय के तनावों को उन्होंने जिस तरह कविता में व्यक्त किया है वह उन्हें समकालीन कविता के साथ सम्बद्ध करता है और उनकी एक पहचान बनाता है। यह बात सुधा गुप्ता के सम्बन्ध में खास तौर से कही जानी चाहिये कि वे सहसा ही, एक दिन में महत्वपूर्ण नहीं हुई हैं, वे लम्बे काव्याभ्यास के कारण निरन्तर महत्वपूर्ण होती गई हैं। जो कवि अपनी आन्तरिक दुनिया के साथ समय को पहचानता, मिलता, आवश्यकतानुसार उससे अलग करता है, पूरे समय के लिए कविता के साथ होता है, वह सुधा गुप्ता की तरह महत्वपूर्ण होने की क्षमता रखता है।

यह कोई रहस्य या जादू नहीं है कि सुधा गुप्ता की कविताएं पारम्परिक और आधुनिक काव्य मुद्राओं से हटकर भी कविताएं बनी रहती हैं। यह इसलिए होता है कि सुधा गुप्ता लगातार मानवीय स्थितियों के साथ सरोकार रखने की कोशिश करती हैं। यही उनकी काव्यशक्ति का उत्स है। इन मानवीय स्थितियों को जब वे पूरी तरह पहचान लेती हैं और उनके साथ आत्मीयता स्थापित करती हैं, वे बहुत सार्थक और कद्दावर लगती हैं।'

डॉ. सुधा गुप्ता की कविताओं के विषय वे ही हैं जो हमारे आसपास हमारी दुनियां के साथ रमण किये हैं। नदी, पेड़, बालू के टीले, गरीबी का रेगिस्तान, भट्टी और चूल्हा, सेवानिवृत्ति, चाबुक और घोड़े, कटता हुआ जंगल, भूख, उखड़े हुए लोग, जिन्दगी की मार ; ये सब हमारे अपने हैं। हम इन्हीं के आसपास, साथ रहते हैं। उनकी संवेदनाएं, उनके दर्द, उनकी जिजीविषाएं, उनके खंडित स्वप्न सबके साथ कवयित्री का तादात्म्य है। उन सबके साथ वह भी अपनी भावनाओं के यथार्थ को भोगती हुई विचलित होती हैं। उनकी आहों को अपनी आहें देती हैं। यथा-

सुबह होते ही पेट की आग के साथ ही
चूल्हे की आग भी सुलगने लगती है
हर घर में, हर रोज
दिन की शुरूआत इसी तरह से होती है।
कहीं भी तो, कुछ नहीं है ऐसा
जो गरीब अमीर के
चूल्हे की आग में फरक करता हो।

(भट्टी : चूल्हा, पृ. 35-36)

और यह भी -

कटकर भी पेड़ मरता नहीं
इन्तजार करता है फिर से पनपने का।
उसकी जिजीविषा
पत्तों और शाखाओं में नहीं
उसकी जड़ों में है
जो बहुत गहरी उतर चुकी हैं।

(पेड़ की जिजीविषा, पृ. 73-74)

हमारी साहित्यिक मण्डली में सुधाजी ने बराबर हर कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दी। सन् 1982 में मेरे द्वारा संस्थापित सम्प्रति संस्थान से भी सुधाजी जुड़ीं। होली के अवसर पर 1985 से दैनिक जय राजस्थान में हमने अपनी साहित्यिक मित्र मण्डली पर हास्य व्यंग्य जनित काव्य चुटकियां लिखीं। उसमें सुधाजी पर लिखा-

कहन लागे मुझको मीरां-मीरां।
बाल समय हरि पास न आये, तरुणाई के तीरां।।
कविताई सौं ब्याह रचायो, हल्दी लगी न जीरा।
विरह समुद्र उमड़कर आयो, नेकु रह्यो नहिं धीरा।।
पुस्तक पांच प्रकाशित कीन्ही, अद्भुत भयो सरीरा।
होली के दिन आय सुधासौं, मीरांजी लिपटानी।।
गुपचुप प्रेम प्रसंग चलायो, यह अनकही कहानी।
माई री मैं तो रह गई छानीमानी।।

(मसखरी, पृ. 3, 1985)

कहदें कि 'रावणहत्था' शीर्षक सुधाजी की प्रसिद्ध एवं प्रिय कविता थी। हमने उसी को निशाना बनाते हुए होली पर मसखरी लिखी-

बजा रहा था लड़का
एक दिन रावणहत्था
कवयित्री सुधा को वह भाया।
एक बार नहीं, सौ बार बजाया।
फिर अपने पास सुलाया।
बारह के बीच के करीब
उठा रावणहत्था
कवयित्री को जगाया
कहा- जाओ ना सुधा, ओ री सुधा!
इतने में कुत्ता भौंका-
कविता, कविता, कविता।।
रावणहत्था चौंका-
सुधा, सुधा, सुधा।

(मसखरी, पृ. 6, 1986)

उसके बाद अन्तिम बार सुधाजी को पुन: याद करते हुए 1994 की होली पर यह दोहा लिखा-

अब तुम तो दीखो नहीं, मन में यही मलाल।
काके मुख जाकर मलैं, सुधि की लाल गुलाल।।

कुछ यादें होती हैं जो याद करने पर बड़ी दुख देती हैं। अब तो एक-एक कर अनेक यादें दुख भीनी हो गई हैं। सुधाजी के बाद कभीकभार मैं उनके परिजनों से मिलने जाता रहा।

गुप्ताजी का अचानक 5 जून को फोन आया। बोले, 'भानावतजी, सुधा की छोटी भाभी कृष्णा का निधन हो गया। भाई तो पहले ही चल बसे थे।' मैंने पूछा- 'माताजी कैसी हैं?' बोले, 'आपको पता नहीं, वह तो जनवरी में ही चल बसीं।'

राजस्थान की महिला रचनाकारों की हिन्दी काव्यधारा का जब-जब भी पलेवण-समीक्षण होगा, डॉ. सुधा गुप्ता उनमें एक बड़ा नाम होगा।

रक्तदान शिविर में 101 यूनिट रक्त संग्रहण

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान, केन्द्रीय औधौगिक सुरक्षा बल एवं एयरपोर्ट आर्थेरिटी ऑफ इण्डिया के संयुक्त तत्वावधान में विश्व रक्तदान दिवस पर महाराणा प्रताप एयरपोर्ट परिसर में स्वैछिक रक्तदान शिविर आयोजित कर 101 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। शिविर में सीआरपीएफ के जवानों, पदाधिकारियों, एयरपोर्ट ऑर्थेरिटी के कार्यकताओं एवं विभिन्न उड़ानों से प्रस्थान करने वाले यात्रियों ने रक्तदान दिया। उदयपुर एयरपोर्ट निदेशक अनिल शर्मा, केन्द्रीय सुरक्षाबल के डिप्टी कमाडेन्ट जी. एम. अंसारी, एयरपोर्ट के सहायक महाप्रबंधक सूरजमान मीणा तथा नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने दीप प्रज्वलन कर रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर एयरपोर्ट के मुख्य सुरक्षा अधिकारी सी.एस.मीणा, प्रबंधक मानव संसाधन सुशील कुमार, प्रबंधक संचार सुनील विस्वाल, अधीक्षक संचार राजीव मीणा तथा हरीश कुमावत भी उपस्थित थे।

शिक्षाविद् श्यामलाल कुमावत का निधन

आलोक संस्थान के संस्थापक जानेमाने शिक्षाविद् श्यामलाल कुमावत का 5 जून को स्वर्गवास हो गया। उनके बड़े बेटे डॉ. प्रदीप कुमावत ने मुखाग्नि दी। श्री कुमावत का जन्म 2 अक्टूबर 1933 को बेहद गरीब परिवार में हुआ। वर्ष 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आह्वान पर भानुकुमार शास्त्री के साथ छह माह जन्मू जेल में व्यतीत किये। शिक्षा के क्षेत्र में अलख जगाने के लिए वे निरन्तर सक्रिय रहे। आलोक स्कूल की शाखाओं में वृद्धि करते उन्होंने हिरण मगरी, फतहपुरा, राजसमन्द तथा चित्तौड़ में आलोक स्कूल खोले। वे विश्व हिन्दू परिषद्, भारतीय शिक्षण मण्डल, भारत विकास परिषद्, भारतीय जनसेवा प्रतिष्ठान, भारतीय कुमावत क्षत्रीय महासभा, अखिल भारतीय नववर्ष समारोह समिति, रोटरी क्लब सहित अनेक संगठनों में विभिन्न पदों पर रहे।

पोथीखाना पोथीखाना पोथीखाना

जैन कर्म सिद्धांत में आचार्य देवेन्द्र मुनि का अवदान

डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि जैन साहित्य, दर्शन तथा अध्यात्म के विद्वान अध्येता हैं। बारह वर्ष की उम्र में सन् 1998 को आचार्य देवेन्द्र मुनि से उन्होंने दीक्षा ग्रहण कर अपना अध्ययन जारी रखते हुए 2007 में उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से प्राकृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर स्वर्णपदक प्राप्त किया।

आचार्य देवेन्द्र मुनि के सान्निध्य में रहकर ही उन्होंने उच्च अध्ययन की प्रेरणा प्राप्त की। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय प्रसंग ही कहा जाएगा कि आचार्य देवेन्द्र मुनि ने कर्म सिद्धान्त के गहन अध्ययन, दार्शनिक स्वरूप को लेकर विश्लेषण और वैज्ञानिक विवेचनाएं प्रस्तुत कर दस खण्डों में जो साहित्य सृजित किया उसी को अपना शोध कार्य बनाकर द्वीपेन्द्र मुनि ने 'देवेन्द्राचार्य कृत कर्मविज्ञान : एक अध्ययन' विषय पर सुखाड़िया विश्वविद्यालय से ही पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। प्रस्तुत ग्रन्थ उसी शोध प्रबन्ध का प्रकाशन स्वरूप लिये है।

प्राकृत भाषा के अलावा डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि हिन्दी, पंजाबी और संस्कृत के भी उद्भट विद्वान हैं और जैन आगम, दर्शन, न्याय आदि के शास्त्रीय एवं व्यावहारिक व्याख्याता हैं। 'साधु जीवन उच्च विचार' की परिदर्शना करते हुए मुनिश्री द्वीपेन्द्र श्रमणसंघीय सलाहकार एवं अपने ज्येष्ठ गुरुभ्राता दिनेश मुनि तथा लघु गुरुभ्राता डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि के साथ निरन्तर पद विहारी बने हुए हैं। विहार-विचरण के इस क्रम में अब तक राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमाचलप्रदेश, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना आदि क्षेत्रों में धर्म की अखंड-प्रभावना जगाते हुए साधना, संयम, सौहार्द्र तथा समता के सुगम किन्तु ऊर्जस्वी-ओजस्वी पथ पर अग्रसर हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ 6 अध्यायों में विभाजित है। पहले अध्याय में आचार्य देवेन्द्र मुनि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को बड़े विसतार के साथ विवेचित किया गया है। द्वितीय अध्याय में कर्म विज्ञान में कर्म के स्वरूप, तृतीय अध्याय में कर्म के भेद-प्रभेद, चतुर्थ अध्याय में जीवस्थान की दृष्टि से कर्म, पंचम अध्याय में कर्म विज्ञान में गुणस्थान का स्वरूप तथा षष्ठ अध्याय में कर्म विज्ञान में योग के स्वरूप पर विस्तार से विवेचन किया गया है। सातवां अध्याय उपसंहार का है। निष्कर्षत: कहा गया है कि आचार्यश्री देवेन्द्र मुनिजी म. के कर्म विज्ञान की अनेक दृष्टियां हैं जो आधुनिक समय में भी कल्याणकारी कही जा सकती हैं। आचार्यश्री ने जो कथन किया उसमें अनेक संदर्भ हैं। सभी दार्शनिकों, मतों, विचारकों एवं प्राज्ञजनों के विचार हैं।

कहना नहीं होगा कि पूरे ग्रन्थ में हजार से भी अधिक संदर्भ ग्रन्थों की सूची दी गई है। प्रत्येक अध्याय के साथ आचार्य देवेन्द्र मुनि के जैन कर्म सिद्धान्त में उनके अवदान को रेखांकित किया गया है। इस अध्ययन से आचार्य देवेन्द्र मुनि के साथ ही कर्म सिद्धान्त के सम्बन्ध में विभिन्न शास्त्रों, धर्मग्रंथों, पंथों-सम्प्रदायों की मान्यताओं एवं मत-मतांतरों को समझने, परिभाषित करने की दृष्टि विशाल बनती है। श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर से प्रकाशित 460 पृष्ठीय इस ग्रंथ की कीमत 250 रूपये है ताकि सबके लिए यह सहज सुलभ बन सके।

लोकरंग उत्सव पर 'मणिधर' और 'गंधर्व'

भोपाल की आदिवासी लोककला परिषद एवं तुलसी अकादमी से लोकरंग-2018 के आयोजन पर प्रकाशित 'मणिधर' और 'गंधर्व' नामक दो प्रकाशन अत्यन्त ही लुभावने चित्रों तथा तदनुरूप सामग्री लिए सहसा सभी का चित्त हर लेते हैं। अच्छे मोटे चिकने कागज पर उत्कृष्ट छपाई का दरसाव देते ये प्रकाशन विद्वानों तथा शोधकर्मियों को 'मणिधर' के माध्यम से पूरे देश में प्रचलित नागों-सांपों की जानकारी देते हैं वहीं 'गंधर्व' के अन्तर्गत फूंकजनित वाद्यों के सम्बन्ध में प्रचलित कथा, आख्यान, मिथक, वादक और उनसे जुड़े संस्कारों से रू-ब-रू कराते हैं। ऐसे सम्मोहक तथा सर्वोपयोगी प्रकाशन हर विद्वान तथा शिक्षालय-पुस्तकालयों की शोभा हैं परन्तु लगता है इन्हें जन सुलभ नहीं बनाकर अधिक सीमित मात्रा में ही उपलब्ध कराया गया है इसीलिए इनमें विषयसूची, पृष्ठ संख्या, मूल्य आदि का अभाव खटकता है।

भक्त कवि पं. मगनीराम

भक्त कविवर पं. मगनीराम के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर 72 पृष्ठीय यह कृति प्रो. भूपतिराम साकरिया द्वारा लिखित-सम्पादित गहन शोधपरक अध्ययन है जो पहलीबार बड़े मनोयोग से विद्वत्जगत को समर्पित है। यह सुयोग ही है कि पं. मगनीराम प्रो. साकरियाजी के प्रप्रपितामह थे। साकरियाजी का पूरा घराना ही प्रज्ञा-महर्षियों का घराना रहा। साकरियाजी के पिताश्री बदरीप्रसादजी और स्वयं डॉ. भूपतिरामजी ने परम्परागत राजस्थानी सृजन विविधा में अपनी रचनाशीलता का अप्रतिम योग देते हुए प्राचीन अलभ्य ग्रन्थों के सम्पादन तथा हिन्दी-राजस्थानी सबद कोश निर्माण में उल्लेखनीय अवदान के कारण स्मरणीय बने हुए हैं।

पं. मगनीराम भी ऐसे ही सवाये रचनाकार थे जिन्होंने अपने पिता मूलचन्दजी से बाल्यकाल में ही भजन, कीर्तन, धार्मिक ग्रन्थों के पारायण तथा कथावाचन की अद्भुत क्षमता प्राप्त कर ली। अपनी विलक्षण बुद्धि तथा न्यायप्रियता के कारण अपने तथा आसपास के अनेक गांवों में प्रपितामह अणदोजी की तरह ही लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी। उनकी भक्ति सम्बन्धी ज्ञानचर्चा से जोधपुर नरेश मानसिंहजी भी बड़े प्रभावित हुए। राम-नाम में अटूट

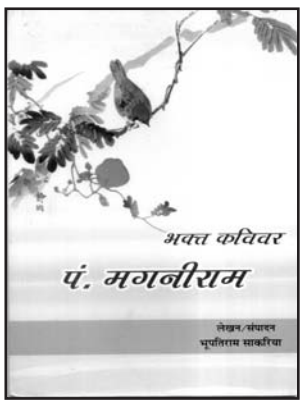

निष्ठा होते रहने से वे अन्त तक राम नाम का जप करते रहे और मृत्यु का पूर्वाभास होने पर वे सिद्धासन में बैठ 75 वर्ष की आयु में पंचतत्व में विलीन हो गये।

पं. मगनीराम ने डिंगल और पिंगल दोनों भाषाओं में अधिकारपूर्वक काव्य-सर्जना की। मगन सतसई उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति कही जाती है जिसमें भक्ति तथा नीतिपरक सात सौ दोहे थे पर यह पाण्डुलिपि के रूप में ही कहीं गायब हो गई। श्रीसंत महात्मा पं. मगनीरामजी निरंजनी सम्प्रदाय में कंठेधारी अनुयायी बनने के परिणामस्वरूप रची गई। पंथ प्रवर्तक स्वामी हरिपुरुषजी की महिमा, परम्परा और विशिष्ट संतों का दरसाव देती यह 9 दोहों, 2 सोरठों, 4 छप्पय तथा 39 मोतीदास छन्दों की सरस कृति है। हरिनाम बत्तीसी में 33 दोहे हैं। गूढ़ार्थ वर्ण बत्तीसी में कवि के अपरिमित शब्द भण्डार का ज्ञान, काव्यकला कौशल तथा पांडित्य देखने को मिलता है।

तीन चित्रकाव्य के अलावा अनेक फुटकर गीत, छन्द, दोहे, सोरठे, कवित्त, मरसिया छप्पय मिलते हैं। इनकी वानगी इस कृति में साकरियाजी ने विशेष सम्पादन तथा आवश्यक टिप्पणी के साथ दी है सो बाजवक्त रूरत काम आये। इसका प्रकाशन डॉ. साकरियाजी ने स्वयं अपने निवास 13/14, रघुवंश सोसायटी, वल्लभविद्यानगर-388120 से किया है और मूल्य भी सादर भेंट लिखा है।

घास-फूस के निराले शृंगार

-डॉ. मालती शर्मा-

गेहूं की घास को हमारे ब्रज में नरई कहते हैं। लोकभाषा में सभी के लिए पृथक नाम हैं। ज्वार, बाजरे, मक्का के तने को करब कहा जाता है। ग्राम्य जीवन तो सारा का सारा घास के ठाठबाट से ही ओतप्रोत है। हमारे यहां ब्रज की बालाएं करब का गिलंगा छील कर उसे लच्छे, पायजेब, बाजूबन्द, अंगूठी आदि गहने, गुड़िया के गिलंगे और चीपों से बुना संवारा पलंग, पीढ़ा, पंखा व जाने स्वयं के और घर-संसार के कितने साज शृंगार बना गर्मियों की लम्बी दुपहरी किसी नीम तले या गौशाला में अपने सपने साकार कर बिता देती है। लड़के करब के गिलंगे छील कर बन्दूक और उसकी गोली, तीर-कमान बनाते हैं। अरहर की हरी लौद से गाड़ी, रथ, मंझौली बनाते हैं। मूंज की सिरकी और सरकण्डों से भी ये चीजें बनती हैं।

गांवों की घास-फूस की यह कला अब शनैः-शनैः लुप्त होने की स्थिति में है। बिजली का पंखा विवाह में दे देने पर अब श्रावण में सोहगी पर लड़की की सुसराल चावल-सेमरी की झाल पर सिरकी-सींक और नरई के बुने कलात्मक पंखे नहीं भेजे जाते हैं। नई पौध इन्हें बुनना भूल रही है और पाने-सहेजने की अब उमंग भी नहीं रही। वक्त रहते जरूरत है घास की अमरबेली-कला को जोड़ ढलाई की सभ्यता के उकठे से बचाने की, नई संभावनाओं की खोज कर युगानुरूप देन की।

पटसन के छ म छ म छमकते सन बीजनों / पट बीजनों से भी तरह-तरह के बजने गहने बनाये जाते हैं। इन्हें सूई से धागे में पिरो लेते हैं। गांव का कोई अलबेला किशोर किसी अलबेली किशोरी को ये ही गहने उपहार में दे डालता है। बिछुये, अनवट, नइयां बनाना इनसे एकदम आसान है। एकबार तो मैंने सन-बीजों का हथफूल भी बना देखा था। पनसुरी सबसे लोकप्रिय गहना है। दूआ बंगली भी - 'पैरो नी पायल पनसुरी / छमछम बजरी पायल।'

अरहर की हरी लौद से गांव के लड़के बिलैय्या डाल कर बड़ी कलात्मक छड़ियां बनाते हैं। वह यों कि अरहर के तने का पूरा छिलका उतार लिया, उसी चीप में से एक मोटी चीप लहरदार ढंग से छिली लौद पर लपेट दी फिर उसे शाम को अघाने (अलख) में लगा दिया। खाली हिस्सा घुंआरे रंग का हो गया। चीप लपेटा हिस्सा कच्च हरा रह जाता है। बस बिलैय्या पड़ गई, छड़ी तैयार।

कृषक के तो घर-आंगन कोठी-कुठीले गांव-गोठ में बस सारा साज सिंगार घास का है। मूंज, नरई, सनई, कांस, पतेल और अरहर की लौद से डलिया, बोइमा, पंखा, ओटा-ओबरी, आसन-बासन क्या-क्या नहीं बनता। कांस मूंज की सिरकी सींक और बरूओं-सरकण्डों पर तो कंजरा हाबूड़ा जाति के अनेक परिवारों की रोटी चलती है। सिरकी के बने झूनझूने, सूआ, परेव, रस्सी बने छींके लिए कंजरियां बेचती और गाती नजर आयेगी ब्रज के किसी भी गांव में-

'लाला खिलौना लेउ जी, लेउ जी /
कोई कंजर भूखे जायें जी।'

या फिर- 'लाला कूं चिरैया लै लेउ, ले लेउ।'

कभी-कभी गृहस्वामिनी की प्रशंसा करके भी चीजें बेचने की कोशिश करती हैं। 'एक बौहरी मेरे मोह (मुख) पै तोता चानै' और प्राय: वे सफल रहती हैं अपनी लक्ष्यसिद्धि में।

मूंज की सिकरियों के बने ओटे (परदे) बड़े कलात्मक होते हैं। आड़-ओट के लिए इन्हें कहीं भी उठा कर लगाया जा सकता है। सरकण्डों की ओबरी तो लोकगीतों में काफी मशहूर है। मूंज के वस्त्रों से बनी डलियां भी मोहक होती हैं।

गांवों की घास-फूंस की यह कला अब शनैः-शनैः लुप्त होने की स्थिति में है। बिजली का पंखा विवाह में दे देने पर अब श्रावण में सोहगी पर लड़की की सुसराल चावल-सेमरी की झाल पर सिरकी-सींक और नरई के बुने कलात्मक पंखे नहीं भेजे जाते हैं। नई पौध इन्हें बुनना भूल रही है और पाने-सहेजने की अब उमंग भी नहीं रही। वक्त रहते जरूरत है घास की अमरबेली-कला को जोड़ ढलाई की सभ्यता के उकठे से बचाने की, नई संभावनाओं की खोज कर युगानुरूप देन की।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 जून 2018

सम्पादकीय

साहित्य में पद्य की तलाश

आजादी के बाद ज्यों-ज्यों समय व्यतीत हुआ, साहित्य-सृजन में पद्य अर्थात् काव्य की भूमिका कम होती गई। गद्य और पद्य में लिखे जाने वाले साहित्य का आनन्द वाचन की बजाय गाने में अधिक आता। ऐसे गाने के विविध प्रकारों के विविध छन्द बने और एक पूरा छन्द शास्त्र ही निर्मित हुआ। कवियों ने भी विविध छन्दों में खूब लिखा।

सबसे अधिक तो दोहा छन्द चला। इस छन्द में जो जितना लिखा गया, अन्य किसी छन्द में नहीं लिखा गया। कई सतसइयां लिखी गईं। कविवर बिहारी इसी कारण सर्वाधिक चर्चित ही नहीं, सर्वाधिक लोकप्रिय भी हुए। विद्वानों ने उनके एक-एक दोहे के भिन्न-भिन्न अर्थ किये। उन सभी का अध्ययन किया जाय तो एक-एक दोहे के बीस-बीस अर्थ भी मिल जायेंगे। इससे यह तो लगता ही है कि बिहारी की काव्य-शक्ति कितनी ऊर्जस्वी थी। कल्पनातीत और अतुलनीय बेजोड़ थी।

लोकजीवन में दोहा छन्द कई रूपों में रचा मिलता है। डेढ़ कड़ी का दोहा, ढाई कड़ी का दोहा, लंगड़ा दोहा जैसे भेद बड़े विचित्र तथा अजूबे हैं। फिर दोहे को उल्टा करके पढ़ो तो वह सोरठा छन्द बन जायेगा। अब जो रचना हो रही है वह काव्य-शक्ति से परे है। पद्य में जो नहीं लिखा जा रहा है, वह भी काव्य की श्रेणी में ही है। उसे कई नामों से विद्वानों ने संवारा है। बड़ा भेद अ-कविता कहकर सम्बोधित किया। वह उस तरह की कविता नहीं है छन्दबद्ध; मगर फिर भी कविता है। अब तो यह भेद भी नहीं रहा।

कविता को गद्य की भाषा बनाने, शक्ल देने अथवा उस रूप में ढालने का, सरलीकरण करने का श्रेय यदि किसी सिद्ध कवि को दिया जाय तो वे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त थे। इस दृष्टि से उनकी सारी काव्य-कृतियां गवाह हैं। रंग में भंग, पंचवटी, जयद्रथ वध से लेकर महाकाव्य साकेत तक को यदि देखा जाय तो काव्य की प्रत्येक पंक्ति गद्य का ही गहवारा लगती है। उनकी विशेषता यह रही कि उन्होंने बड़ी सहज, सुगम और सरल शब्दावली में जो पद्यबद्ध गद्य दिया, वह लयबद्ध है, छन्दबद्ध है। यदि एक-एक पंक्ति को अलग कर देखा जाय तो वह गद्य पंक्ति ही ध्वनित होगी। यथा रंग में भंग का प्रथम छन्द -

लोकशिक्षा के लिए अवतार जिसने था लिया।
निर्विकार निरीह होकर नर सदृश कौतुक किया।।
राम नाम ललाल जिसका सर्व मंगल धाम है।
प्रथम उस सर्वेश को श्रद्धा समेत प्रणाम है।।

पंचवटी का यह छन्द -

बेचारी उर्मिला हमारे लिए व्यर्थ रोती होगी।
क्या जानें हम जंगल में हैं उससे इतने सुख भोगी।
एक राज्य के लिए जगत ने कितना महा मूल्य रखा।
हम को तो मानो वन में ही है विश्वानुकूल रखा।

और साकेत की ये पंक्तियां -

राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।।

ये केवल उदाहरणीय नमूना हैं। पूरा का पूरा काव्य इस दृष्टि से खंगालने पर काव्य-पंक्ति केवल शब्द आगे-पीछे करने से ही गद्य-पंक्ति बन जायेगी। महत्वपूर्ण पक्ष यह रहा कि गुप्तजी ने लय और छन्द को बराबर बनाये रखने का सफलतम उपक्रम किया किन्तु आगे जाकर रचनाकारों ने उसकी बेढंगी, ना समझी नकल कर उसके काव्य-पक्ष को विकृत कर बेढंगा, बेतरतीब, बेमतलब का गद्य बना पद्य-शक्ल में लंगड़ाता कर उसे ही चलता कर दिया।

चलाचल

पीपल का एक जीर्ण पत्ता
धीरे से लरज कर गिर पड़ा धरती पर।
हवा का एक हलका सा
झोंका तो आया था,
पर वह तो बहाना मात्र था।
असल में तो डाली ने ही
उसे धक्का दिया था।
हवाएं तो उस दिन भी बहुत तेज थीं
जिस दिन ताम्रांकुर के रूप में इसने
अपनी पूरी टीम के साथ
डाली पर जमाया था अपना डेरा।
हवा ने उसे दुलराया
फुनगी ने उसे मुकुट बनाया
जमीन से पानी पिलाया
सूर्य ने ऊर्जा प्रदान की।
धीरे-धीरे ताम्रता हरीतिम हुई,
यौवल लहराया,
प्रौढ़ता जागी
पत्ता बोझिल हो गया
उसके पैर लड़खड़ा गये।
जन्म और मृत्यु का
यह चलाचल खेल
इसी तरह चलता रहा है,
चलता रहेगा।

-शासनश्री मुनि सुखलाल

नागराज की सवारी

राजस्थान में नागों के रत्नों को प्राप्त करने वाली एक जाति है जो जागा नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि नागपंचमी के दिन जागा लोग किसी निश्चित खुले स्थान में एकत्र हो जागरण करते हैं। जाति का मुखिया बीच में बैठकर जागरण सम्बन्धी मंत्रों का उच्चारण करता है। उसके आसपास नागों के पीने के लिए मिश्री मिश्रित दूध के सैकड़ों कटोरे रख दिये जाते हैं। रात्रि को ठीक बारह बजे विभिन्न रास्तों से नाग आने लगते हैं और अलग-अलग कटारे के पास फन फैलाकर खड़े रह जाते हैं।

इतने में नागराज की सवारी आ पहुंचती है। ये एक सर्प पर आरूढ़ होकर आते हैं। उनकी सवारी सभी पात्रों के बीच रखे एक बड़े पात्र के वहां आकर रूक जाती है। नागराज सर्प से उतरकर सभी सांपों का अभिवादन स्वीकारते हैं तदनन्तर अपने पात्र का दूध पीना प्रारंभ कर देते हैं। उनके दूध पी लेने के बाद दूसरे नाग अपना दूध पीना प्रारंभ करते हैं और फिर नागराजा सहित सभी अपने-अपने कटारों में एक-एक रत्न उगलते हैं। तदनन्तर नागराज के साथ सभी सर्प अपने गंतव्य को लौट पड़ते हैं। नागों द्वारा उगले गये रत्न जाति का मुखिया एकत्र करता है जिसे सभी आपस में बांट लेते हैं।

-डॉ. तुक्तक भानावत

कानोड़ में सर्वसुखी प्रीतिभोज

कानोड़ में 10 जून को बादामबाई-मदनलालजी भाणावत द्वारा आयोजित सर्वसुखी प्रीतिभोज में सभी समधी, ब्याई सगे, परिवारजन, समाजजन तथा शब्द रंजन परिवार से डॉ. महेन्द्र-तुक्तक भानावत आदि सोल्लास उपस्थित हुए।

अनाम रचनाकारों....

(पृष्ठ एक का शेष)

ये गद्य, पद्य और चम्पू दोनों-तीनों रूपों में, विविध छन्दों, अलंकारों तथा राग-रागीनियों में निबद्ध हैं। इनमें मुक्तक काव्य के साथ-साथ खंड काव्य और वृहत् रूप में महाकाव्य भी लिखे मिलते हैं। इनके साथ धार्मिक अनुष्ठान तथा सामाजिक संस्कार जुड़े होते हैं इसीलिए ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी दीर्घजीवी होती हुई जीवंत बनी रहती हैं और समसामयिक घटना-परिवेश को भी प्रभावित किये रहती हैं।

राजस्थान में विविध गीतों, पदों, गाथाओं, ख्यालों के रूप में ऐसा मौखिक लोक में प्रचलित आदरित साहित्य कई जातियों में दैनिक जीवन का आवश्यक अंग बना हुआ है। कई कलाधर्मी जातियों का व्यवसाय ही इस साहित्य को केन्द्रित किये है। गाने-बजाने-नाचने तथा ख्याल तमाशा करने वाले कलाकारों की तो यह जीवनी संपदा ही कही जानी चाहिये।

चारण, भाट, ढांढ़ी, ढोली, दमामी आदि जातियों का कार्य ही यही रहा। अपने यजमानों को काव्यशक्ति के माध्यम से रिझाकर इन लोगों ने अपने परिवार का भरण-पोषण ही नहीं किया अपितु बड़ी-बड़ी जागीरियां तथा लाख-करोड़ पसाव जैसे मान-सम्मान भी प्राप्त किये।

रात-रात, दिन-दिन कथा-वार्ता कहने वाले बातपोषी, कथक्कड़, परवाने गाने वाले, हरजस गाने वाले, बही-चौपड़ों द्वारा वाचन करने वाले बही भाट; महाभारत के कथा-प्रसंग छोये तथा डिवाल गाने वाले, पृथ्वीराज आदि के कड़े गाने वाले, देवी-देवताओं के जीवन-चरित्र को विशिष्ट गायकी में निबद्ध करने वाले भारत गायक, पृथ्वी की उत्पत्ति और पशु-संस्कृति के रक्षक कृषि-कर्म करने वालों द्वारा गाई जाने वाली हीड़ गाथा, मीरां आदि भक्त-संत के फली गीत-गाथा गाने वाले, ढोला-मारू आदि प्रेमी-प्रमिकाओं के दूहे (दोहे) गाने वाले अपने में जो सृजन किये हुए हैं वह साहित्य, इतिहास, संस्कृति और जीवन-बोध के उदात्त एवं उत्कर्ष पूर्ण निकष का अखूट खदान ही कहा जाना चाहिए।

राजस्थान में सर्वाधिक अनाम रचनाएं पदों की होती रहीं। ये पद मीरां नाम से सर्वाधिक मिलेंगे। आलम यह है कि सैकड़ों पद मीरां की छाप लिये मिलेंगे जबकि उन पदों में से एक भी पद मीरां का लिखा नहीं मिलेगा। ऐसी कई महिलाएं, कई पुरुष हुए जिन्होंने कठिन दौर को पाटने के लिए, मुसीबत को हल्का करने के लिए, भक्ति के वशीभूत होकर, विरह को, दुख को, दोरम को, दारिद्रय को मेटने के लिए पद लिखे। सर्वाधिक पद महिलाओं द्वारा रचे गये। यह क्रम आज भी यथावत जारी है। ब्रज में, गुजरात में ऐसी कई भक्त महिलाएं हैं जो मीरांमय होकर मीरां के नाम से जगजाहिर हो रही हैं। कहती हैं, मीरां हमारे दिल में आकर हमें यह सब करवाती है। हम तो अनजान हैं।

यहां चंद्रसखी के, कबीर के नाम के भी कई पद मिलते हैं। रैदास ने भी बहुत गाया-लिखा पर उसके संतपन को, भक्तिमन को कोई नहीं जान पाया और चमार होने के कारण, मीरां के साथ, मीरां का गुरु होने पर लांछित ही अधिक किया गया। रैदास के नाम पर तो मीरां को भी इस जगत में कम लांछन नहीं दिया। आज वही जगत मीरां को गा रहा है।

राजस्थान में मैंने कई नाम-छाप के पद विभिन्न गायक जातियों द्वारा सुने हैं। देवीलाल, जोरावरमल, गंगाराम, कालूराम, रामलाल, उत्तमनाथ, रामदास, प्रेमदास, लिखमा, ओंकार, हजारी, बनानाथ, दुर्बलदास, जोगनाथ, गोपेसर, तुलसीदास, गंगादास, राघवलाल, टेकचंद, शंकरनाथ, लक्ष्मीलाल, कमाल, धीनदास, कल्याण, अचलूराम, चरणदास, मौजीराम जैसे पचासों नाम हैं। ये कौन थे, कहां के थे, कोई नहीं जानता।

- म. भा.

सिकोतरी पंथ

मेवाड़ में ऊंदर्‌या, कांचलिया, कूण्डा जैसे पंथ की तरह ही सिकोतरी पंथ का प्रचलन है। ये सभी पंथ नितान्त गोपनीय स्तर पर अपना गुपचुप प्रभाव दिये रहते हैं। इनके सदस्य बहुत सीमित होते हैं जिसकी भनक तक उनके आस-पास रहने वालों को भी नहीं लगती है।

डॉ. चम्पादास कामड़ ने 26 सितम्बर 2002 को उदयपुर में एक भेंट के दौरान बताया कि सिकोतरा एक वीर है जिसकी साधना पद्धति तांत्रिक है। इस पंथ का उद्‌भव भीलवाड़ा जिले के खजूरिया खेड़ा नामक गांव से हुआ कहा जाता है। यह वहीं की मां-बेटी, नोजी-भूरी नामक महिलाओं की देन है। दोनों तांत्रिक विद्या में प्रवीण थी। उनके बाद लादूवास की सागरी ने इस पंथ को बढ़ाया। सागरी ने यह विद्या नोजी-भूरी से ही सीखी। भूरी सागरी की गोठण थी।

यह साधना पद्धति चूड़ियों तथा नींबुओं से सम्बद्ध है। दोनों को अभिमंत्रित कर इससे जुड़ने वाली महिला सदस्यों को दिया जाता है। ये सदस्य अपने-अपने क्षेत्र में नितान्त गुप्त रीति से यह धाम चलाते हैं। प्रसिद्धि है कि हर सदस्य महिला किसी गोपनीय स्थल पर एक पगल्या स्थापित कर उसके ओरेदोरे चूड़ियां और नींबू रख देती है। पास में पहचान के लिए रामदेवजी के नाम की पांच रंगी धजा गाड़ देती है। आदिवासियों में एक वीर सिकोतरा होता है जो उड़द या फिर नींबू को मंत्रित कर जिस पर उपद्रव करना हो, वहां गुप-चुप रख दिया जाता है। कहीं वीर रूप में आटे का पुतला बनाकर रख दिया जाता है। जिसे बीमारी देनी हो, उसके घर के आसपास ऐसे पुतले के चारों ओर लोहे की पिनें चुभा कर रख जाती हैं। इससे मारक पूरे शरीर को बीमारी घेर लेती है। यह पुतला समय विशेष के लिए काम करता है।

भीलवाड़ा के पुर-मांडल-खेताखेड़ा गांवों में सिकोतरी के स्थल होने की जानकारी में बताया गया कि सिकोतरी के भाव भी पुरुषों को ही आते हैं। सिकोतरी स्वयं नहीं ओतर कर अन्यों को ओतराती है। वह रोती या फिर हंसती हुई आती है। इसे सिद्ध करने के लिए प्रमुख स्थल श्मशान या हनुमान स्थल हैं। लालबाई-फूलबाई सिकोतरी के रूप में जानी जाती है। लालबाई के लाल तथा फूलबाई के सफेद कपड़ा तथा फूंदी चढ़ती है। मेवाड़ में लालां-फूलां के देवरे हैं। बहुत पहले का किस्सा है किन्हीं सरदार को सिकोतरी लग गई जिससे भारी परेशानी हो गई तब दरबार द्वारा चारभुजाजी का एक पंडा बुलवा कर टोटका करवाया। जगह-जगह चारभुजा के मंदिर बनवाये तब जाकर सिकोतरी का प्रभाव मिटा। जो भी हो, पहले ऐसी विद्याएं थीं। अब उनका प्रभाव सुनने को नहीं मिलता।

संत गिरधारीदास का चमत्कार

कामड़ समुदाय में ऐसे कई संत हुए जिनके चमत्कारों के अनेक किस्से न केवल कामड़ों में अपितु ग्रामीण जनताओं के कंठों पर आज भी बड़े चाव से सुने जा सकते हैं। ऐसा ही एक किस्सा डॉ. चम्पादास कामड़ ने मुझे सुनाया।

अपने निवास पर एक भेट में 13 मई 2018 को उन्होंने बताया कि मेवाड़ महाराणा स्वरूपसिंहजी के समय चित्तौड़गढ़ जिले की राशमी तहसील के गांव अलखजी का खेड़ा में जिसे अडाणा नाम से भी जाना जाता है, गिरधारीदास नामक एक पहुंचे हुए संत थे। उनके कई चमत्कार भरे किस्से न केवल अडाणा में अपितु दूर-दूर तक के गांवों में सुनने को मिलते हैं।

एकबार महाराणा स्वरूपसिंह के कुछ सैनिकों ने गांव के बाहर एक विशाल किन्तु सूखे पीपल के पेड़ को काटना चाहा। यह खबर संत गिरधारीदास को लगी। उन्होंने अपने स्थल पर ही चमत्कार कर उस पीपल के पेड़ को हराभरा कर दिया। यह करामात देख सैनिक बड़े अचम्भे में पड़ गये और बिना पेड़ काटे ही वहां से चल पड़े।

उदयपुर जाकर सैनिकों ने महाराणा के पास यह खबर पहुंचाई तब दशहरे के दिन गिरधारीदास को उदयपुर दरबार में उपस्थित होने का फरमान दिया। महाराणा ने विशाल जनसमूह के बीच एक हाथी को शराब पिलाकर गिरधारीदास पर छोड़ दिया। यह उसकी परीक्षा की घड़ी थी।

गिरधारीदास ने हाथी को अपने पास पाते ही कमंडल से पानी लेकर छांटा दिया। उसका प्रभाव यह रहा कि तत्काल हाथी का नशा उतर गया और आव देखा न ताव, हाथी ने अपनी सूंड पर लेकर संतजी को अपनी पीठ पर बैठा दिया। महाराणा के साथ वहां उपस्थित पूरा जनसमूह संत गिरधारीदास की चमत्कारिक कला देख चकित रह गया।

गिरधारीदास की यह चमत्कारिक कला देख महाराणा ने सराहना की और अडाणा में 12 बीघा, मावली में 5 बीघा तथा सोमी में 24 बीघा मिलाकर कुल 41 बीघा भूमि बख्शीश दी। वर्तमान में इस भूमि पर संत गिरधारीदास के उत्तराधिकारी नवलदास तथा हीरादास कामड़ काबिज हैं।

म्हारो लाला मांई वीरो यो हळदी लपेट्‌यो हीरो

डॉ. हीरालाल श्रीमाली से पहली बार मैं कब मिला, ठीक से तिथि-मास तो याद नहीं रहा पर सन् 1965 का वर्ष स्मरण में है जब मैंने शोधाध्ययन के लिये भीली गाथा में वर्णित बड़ल्या हींदवा को देखने का मन बनाया। गाथा के अनुसार सृष्टि में पहलीबार सातवें पाताल से बड़ी जिद्‌दोजहद के बाद वासुकि नाग से देवियां बड़ल्या लाई जहां नौ लाख देवियों का आज भी बसेरा बना हुआ है। बड़ल्या यानी बड़ यानी वट वृक्ष और हींदवा यानी हींदा यानी झूला; देवियों का झूलना। यह स्थल राजसमन्द जिले के गांव खमनौर, हळदीघाटी के पास है। संयोग से हीरालाल श्रीमाली मिल गये सो मेरी सारी समस्या हल हो गई। तब से हीरालाल मेरे अभिन्न बने हुए हैं जो मेरे से बड़ी उम्र लिये हैं।

याद आ रहा है वे बड़ी आत्मीयता से मुझे अपने निवास पर ले गये। माता-पिता से मिलाया जिनके नाम से उन्होंने लहरी-मोती स्मृति धाम बना रखा है। हीरालालजी ने एक चीड़े की तरह चहक-फुदक कर जो कळेवा कराया उसका स्वाद मेरे लिए गूंगे का गुड़ ही बना हुआ है। इसी समय पास वाले ओवरे से परभाती स्वर सुनाई दिया-

म्हारो लाला मांई वीरो यो हळदी लपेट्‌यो हीरो।
बारा कोसां तांई वधजै बड़ल्या जुग-जुग जीवे वीरो।।

अर्थात् - भारत मां के सभी लालों के बीच मेरा भाई हळदी में लपेटा हीरा है। जैसे वट वृक्ष बारह कोस तक अपनी जड़ें फैलाता विस्तार नापता रहता है वैसे ही मेरा भाई युग-युगों तक अमर रहे।

हीरालालजी ने बताया कि जब भी कोई आता है, यह बधावा गाया जाता है। तब से मेरे हिरदै में भरा वह अमृतायन श्रीमालीजी जब-जब भी मिलते हैं, आंखों में भर आता है। मैंने गवरी में पीएच.डी. की सो आज भी उसी लोक का पंथी बना हुआ हूं और हीरालालजी ने संत साहित्य को अपना विषय बनाया सो वे संत प्रकृति के ही प्रसिद्ध पुरुष हैं।

डॉ. श्रीमालीजी ने अपने जीवन की शुरूआत अमीनजी के पास चेनमेन रहकर की। फिर हल्का-फुल्का व्यापार किया। उड़ीसा में चपरासीगिरी की। पुलिसमेन भी बने और फिर एक शिक्षक के रूप में अपना विधिवत जीवन प्रारम्भ कर सन् 1955 से 84 तक शिक्षा विभाग में अपनी सेवाएं दीं। वे बीएड कॉलेज में रहे और बाद में सन् 1986 से 90 तक राजसमन्द में गांधी सेवा सदन के बाल निकेतन में प्राचार्य बने। इसी दौरान उन्हें राष्ट्रपति द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान मिला।

गांधी सेवा सदन के संस्थापक देवेन्द्रभाई कर्णावट के सम्पर्क से डॉ. श्रीमालीजी अणुव्रत अनुशास्ता तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य तुलसी के सान्निध्य में आये। वहीं मोहनभाई द्वारा संचालित अणुव्रत विश्व भारती में रहे और अणुव्रत शिक्षक संसद से जुड़ परामर्शक और मार्गदर्शक बने। इस बीच आचार्य तुलसी के बाद आचार्य महाप्रज्ञ और वर्तमान आचार्य महाश्रमण का श्रद्धावान सान्निध्य मिला। धर्मसंघ के निष्ठावान संतों तथा श्रावकों के बीच निरन्तर सत्संगी बने रहकर वे स्वयं भी जैसे संत ही हो गये। इन सबसे मेरा भी 'हम नदी के दो किनारे दूर भी हैं, पास भी हैं' की तरह साहित्यिक जुड़ाव बना।

डॉ. श्रीमालीजी ने बताया कि शिक्षक संसद से जुड़े रहते उन्होंने पूरे देश का भ्रमण किया। कोई पांच लाख किलोमीटर के सफर में चार लाख शिक्षकों, सात लाख छात्रों तथा तीन करोड़ से अधिक महिला-पुरुषों से सम्पर्क कर उन्हें व्यसन मुक्त रहने की शपथपूर्वक पालना कराई। अहिंसा प्रशिक्षण के दौरान अणुव्रत के शिक्षक-व्रतों का प्रशिक्षण देकर सत्ताईस सौ प्रशिक्षार्थी शिक्षक तैयार किये। यही नहीं, छात्रों को अणुव्रत शिक्षण की जानकारी हो सके और वे जीवन में अंगीकार कर सकें, इस दृष्टि से समय-समय पर अणुव्रत की परीक्षाएं आयोजित कर आठ लाख साठ हजार छात्र तैयार किये।

जीवन को संयमित और अनुशासित कर स्वावलम्बी राह पर लोग चलें। भौतिकता की चकाचौंध से अपने को विलग रख जीवन निर्माण की सही पगडंडी पर चलते अपना उत्कर्ष करें।

इसका प्रभाव अन्यों पर पड़े और वे अग्रजों का अनुसरण करें, इस हेतु ऐसे लोगों की टोली तैयार की जो दूसरों के लिए आदर्श बन सके लेकिन पहले स्वयं उन व्रत-नियमों की कठोरता से पालना करें, इस दृष्टि से डॉ. श्रीमाली ने सबसे प्रथम अपने से ही यह पहल प्रारम्भ कर एक समय में भोजन के दौरान तीन वस्तुओं से अधिक नहीं लेने का त्याग किया। नाश्ते के दौरान कोई अन्य चीज नहीं लेना तथा मिठाई, नमकीन एवं मेवों का ताजीवन त्याग कर संयम ही जीवन है को अपने में समग्रता से चरितार्थ किया हुआ है।

डॉ. श्रीमाली अपना सौभाग्य ही मानते हैं कि उन्होंने आचार्य विनोबा भावे द्वारा प्रवर्तित आचार्य कुल के अध्यक्ष के रूप में तीन वर्ष का यादगार उपलब्धिमूलक समय व्यतीत किया। इस दौरान लगभग 28 राज्यों की, 1,25,149 किलोमीटर की यात्राएं कर संगठन को सशक्त एवं प्रभावी बनाने का भरकस प्रयत्न किया।

कुल 305 दिन के अपने यात्रा-प्रवास में वे आचार्य कुल की स्थापना स्थली कहलगांव और विनोबाजी के जन्मस्थान गागोदपेण भी गये। उन्हें लगा कि इन दोनों स्थानों का स्पर्श कर उन्होंने अपना जीवन ही सार्थक धन्य किया है। सभी राज्यों में जगह-जगह अचार्य कुल के संयोजकों, अध्यक्षों और पदाधिकारियों ने उनका भावभीना स्वागत किया और जिस दरियादिली से उन्होंने उन अनेकानेक भाई-बहिनों से सम्पर्क किया जो गांधी और विनोबा के प्रभाव से अपना सहज जीवन जीते मानवता के सच्चे धर्म-कर्म के सारथी बने हुए हैं।

इसके अलावा आचार्य कुल से साहित्य के माध्यम से युवकों तथा अन्यों को जोड़ने के लिए राष्ट्रीय तथा राज्यव्यापी अधिवेशनों द्वारा मार्गदर्शिकाएं, फोल्डर, पुस्तिकाएं वितरित कीं। आचार्य कुल पत्रिका का प्रकाशन किया तथा नई शिक्षा नीति पर विशेषांक दिये। अनेक आजीवन सदस्य बनाये। राजस्थान के राजसमन्द, बिहार के मुंगेर तथा उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर में राष्ट्रीय अधिवेशन बुलाये। इनमें एक हजार आचार्य सम्भागी तैयार किये। जगह-जगह कार्यसमितियों की गोष्ठियां आयोजित की गईं। उन्होंने विविध विषयों की 75 से अधिक पुस्तकों का लेखन-सम्पादन किया। कई पुस्तकें निशुल्क भेंट कीं। तीस से अधिक पुस्तकों का तो मूल्य ही 'सादर प्रणाम' रखा।

बड़े अन्तराल के बाद जब हीरालालजी 12 मार्च 2018 को मुझसे मिलने आये तो उन्हें पहचानना तो मुश्किल नहीं बना किन्तु वे अपने शरीर से एक तपस्वी सी कंचन काया लिये, संयमित वाणीधारी तथा दंदफंद विहीन सरल चित्त के सदाचारी विनम्र विनोबा ही लगे। बड़ी देर तक हम अपने प्रारम्भ से तब तक की जीवनधर्मिता के विभिन्न पड़ावों की संस्तुतियों में बतियाते सहभागी बने। उनमें शिथिल उम्र का कोई प्रभाव नहीं देखा गया। आज भी अणुव्रत शिक्षक और आचार्य कुल के प्रशिक्षण के परमोपयोगी उत्साह को साहस के साथ वरण किये वे अथक मनोबली ही बने हुए हैं।

चेटक और प्रताप

चलबे घोड़े
मत खा कोड़े
सरपट सरपट
झटपट झटपट
तेरे पीछे थल पर दौड़े
जलचर सीना ताने चौड़े
नभचर होड़ा होड़ी में
सब ही दौड़ा दौड़ी में
चल दे चल हलदीघाटी
रगत तलाई की माटी
राणाजी को तिलक करो
उनके चरणों शीश धरो
लाख प्रलोभन झुके नहीं
रणबांकुरे रूके नहीं
चेटक और प्रताप सदा
जैसे भारी भीम गदा
अमर तु□हारा नाम है
□या कमाल का काम है।

हिप रिप्लेसमेंट के बाद जगदीश को मिला नया जीवन

उदयपुर। फोर्टिस जेके हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने 11 वर्ष से बाईलिटरल एवेस्कुलर नेकरोसिस नामक बीमारी से पीड़ित व्यक्ति के कूल्हों का सफल ऑपरेशन कर उसे नया जीवन दिया है। फोर्टिस जेके हॉस्पिटल के आर्थोपेडिक सर्जन डॉ. आशिष सिंघल ने प्रेसवार्ता में बताया कि पिछले 11 साल से बाईलिटरल एवेस्कुलर नेकरोसिस नामक बीमारी से पीड़ित 41 वर्षीय कानजी का हाटा निवासी जगदीश सालवी का सफल ऑपरेशन किया गया। एक साथ दोनों कूल्हों का प्रत्यारोपण कर उसे दो दिन में चला दिया गया। उन्होंने बताया कि जगदीश का कई साल पुरानी बीमारी के कारण बायां पैर भी 6 सेमी छोटा हो गया था एवं कूल्हों की हड्डी पूरी तरह खराब हो चुकी थी। ऑपरेशन के बाद जगदीश बिना सहारे चलना-फिरना, दैनिक कार्य करना, सीढ़ियां चढ़ना-उतरना और सामान्य जीवनयापन करने में सक्षम हो गया है।

कैरियर लिफ्ट एड-टेक की शुरूआत

उदयपुर। हम डिजिटल युग में हैं, फिर भी कई शैक्षणिक संस्थान पुराने शिक्षण तरीकों का उपयोग कर रहे हैं और वे शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में सक्षम नहीं हैं। यही कारण है कि मैंने शैक्षणिक संस्थानों मे प्रौद्योगिकी को सक्षम करने के लिए कैरियर लिफ्ट एड-टेक की शुरआत की। यह बात ३-1996 से शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परामर्शदाता रहे हैं करियर लिफ्ट एड-टेक के संस्थापक नितिल गुप्ता ने कही।

श्री गुप्ता के अनुसार ज्ञान को प्रौद्योगिकी उत्पादों के द्वारा समृद्ध किया जा सकता है। शिक्षण के पारंपरिक तरीकों के साथ डिजिटल शिक्षा छात्रों को पूर्ण शिक्षा अनुभव प्रदान कर सकती है। सोशल मीडिया का प्राथमिक उद्देश्य लोगों को जोड़ना है। इस पर जानकारी साझा करना, सहकर्मियों से जुड़ें रहना एवं अपडेटेड रहना बहुत ही आसान है क्योंकि यहां सभी बातें तेज़ी से बदलती है और यहां सभी की आसान एवं निरंतर पहुंच है। ब्लोग्स का उपयोग विभिन्न जानकारियों को आगे साझा करने के लिए किया जा सकता है। यह न केवल स्पष्टता को बढ़ाता है बल्कि इससे लंबे समय की विश्वसनीयता भी बनती है।

ऐक्सिस बैंक की नई शाखा का शुभारंभ

उदयपुर। भारत के तीसरे सबसे बड़े बैंक, ऐक्सिस बैंक की उदयपुर के

भुवाणा में नई शाखा का उद्घाटन जिला पुलिस अधीक्षक राजेन्द्रप्रसाद गोयल ने किया। ऐक्सिस बैंक के प्रेसिडेंट एवं हेड-ब्रांच बैंकिंग संजय सिलास ने कहा कि इस शाखा में बैंकिंग सेवाओं की व्यापक रेंज जैसे-खाता, जमा और बचत व चालू खाता सहित ऋण एवं लॉकर सुविधाएं आदि उपलब्ध होंगी। ऐक्सिस बैंक इस शाखा के जरिए ग्राहकों तक पहुंचेगा और उन्हें डिजिटल पेशकशों से सशक्त बनाएगा तथा ऐक्सिस पे, ऐक्सिस मोबाइल एप्लिकेशन आदि के जरिए सुगमतापूर्वक सेवाएं उपलब्ध करायेगा। यह ग्राहकों को उनके दैनिक ट्रांजेक्शंस के लिए डिजिटल तरीके से भुगतान करने हेतु उन्हें लगातार जागरूक बनायेगा व प्रोत्साहित करेगा। डिजिटल भुगतान समाधानों की दृष्टि से, ऐक्सिस बैंक भारत भर में अपेक्षित ढांचा उपलब्ध करा रहा है, ताकि कैशलेस ट्रांजेक्शंस हो सकें। बैंक के क्यूआर-आधारित स्कैनिंग समाधान छोटे वेंडर्स के लिए कैशलेस ट्रांजेक्शंस करने हेतु शानदार डिजिटल मंच रहे हैं।

हमने राजस्थान के खुदरा एवं संस्थागत ग्राहकों के बीच बैंकिंग सेवाओं एवं उत्पादों की बढ़ती मांग देखी है और इस अंतर को दूर करने के लिए अपने मौजूदा नेटवर्क का विस्तार किया ताकि ग्राहकों को सेवा प्रदान कर संपूर्ण रूप से बेहतर बैंकिंग अनुभव उपलब्ध करा सकें।

पैर के कैंसर का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने पैर के कैंसर से ग्रस्त रोगी का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों पीआईएमएस में पैर के कैंसर से ग्रस्त एक 70 वर्षीय वृद्ध को भर्ती कराया गया। मरीज की स्थिति को देखते हुए प्लास्टिक सर्जन डॉ. एम. पी. अग्रवाल ने डॉ. रुचि टाटिया, डॉ. पिनु राणावत, डॉ. सुरेश कुमार के साथ मिलकर माइक्रोवैस्कुलर तकनीक से ऑपरेशन किया। ऑपरेशन में कैंसर वाले हिस्से को काट कर निकाला गया और पैर को बचाने के लिए हाथ से रक्त नलिकाओं सहित उत्तक लिया गया। उत्तक की रक्त वाहिनियों को पैर की रक्त वाहिनियों के साथ माइक्रोवैस्कुलर सर्जरी के द्वारा जोड़ा गया। यह प्लास्टिक सर्जरी की नवीनतम तकनीक द्वारा किया गया जिसमें शरीर के एक भाग से उत्तक को दूसरे भाग पर लगाया जा सकता है। मरीज का पैर बचा लिया गया है और वह अपने पैर से चलने में सक्षम है।

उदयपुर के छात्र ने दिखाई इंटरनेशनल ओलिंपियाड में प्रतिभा

उदयपुर। साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन द्वारा आयोजित इंटरनेशनल ओलिंपियाड 2017-18 में उदयपुर के छात्र ने इंटरनेशनल रैंक हासिल कर शहर का नाम रोशन किया। शहर से महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल के कक्षा बारहवीं के छात्र आदित्य सिंघल ने इंटरनेशनल कम्पनी सेक्रेटेरिएट ओलिंपियाड में इंटरनेशनल रैंक तीन हासिल किया जिसे ब्रोंज मैडल और पचास हजार नकद राशि मिली। विजेता छात्र छात्राओं को दिल्ली में लोधी रोड स्थित इंडियन हैबिटैट सेंटर में मुख्य अतिथि केंद्रीय विधि और न्यायय कॉर्पोरेट कार्य राज्यमंत्री पी.पी. चौधरी, प्रोफेसर इसरो प्रो. वाई. एस. राजन, एक्समिनेशन ब्रिटिश कौंसिल के डायरेक्टर माइकल किंग एवं इंस्टिट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया के वाइस प्रेजिडेंट अहलदा राओ वुमंथला द्वारा ने सम्मानित किया गया।

एसओएफ के संस्थापक और निदेशक महाबीर सिंह ने बताया कि इस ओलंपियाड परीक्षा में तीस देशों के 1400 शहरों से 45000 स्कूलों के लाखों छात्र शामिल हुए। उदयपुर से 23112 छात्रों ने इस ओलिंपियाड परीक्षा में हिस्सा लिया। ओलिंपियाड परीक्षा में भारत के अलावा सिंगापूर, दुबई, यूऐइ, मलेशिया और जापान के छात्रों ने भी भाग लिया।

75 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

उदयपुर। सामाजिक कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को निरंतर अग्रसर करते हुए मीरानगर स्थित डर्माडेन्ट क्लीनिक के तत्त्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि राजस्थान सिंधी अकादमी के अध्यक्ष हरीश राजानी ने रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अरावली क्लीनिक के निदेशक डॉ. आनन्द गुप्ता ने सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र में निरन्तर सहभागिता हेतु डर्माडेन्ट क्लीनिक के निदेशक डॉ. प्रशांत अग्रवाल की सराहना की। डॉ. प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि शिविर में कुल 75 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। रक्त संग्रहित करने में लोकमित्र ब्लड बैंक एवं थैलीसिमिया रिसर्च सेण्टर उदयपुर ने चेयरमैन डॉ. महेन्द्र श्रीमाली, चिकित्साधिकारी डॉ. एन. एस. कोठारी के निर्देशन में तकनीशियन रोहन मोजेज, सुनील सेन, काउंसलर नीरज सनाढ्य, प्रयोगशाला सहायक गौरव सेन व राजेन्द्र सिंह ने अपना योगदान दिया।

प्रॉपर्टी और फाइनेंस प्रदर्शनी

उदयपुर। डीएचएफएल, भारत की अग्रणी आवास वित्त कंपनियों में से एक, 16 और 17 जून 2018 को प्रॉपर्टी और फाइनेंस प्रदर्शनी का आयोजन करने जा रही है। यह प्रदर्शनी मंगलम पैलेस, शोभागपुरा रोड, शुभ केसर गार्डन के पास, उदयपुर में सुबह 10 बजे से शाम 8 बजे तक आयोजित की जायेगी। ग्राहक 10 लाख से शुरू होने वाले 500 से अधिक किफायती आवास इकाइयों से चुनने में सक्षम होंगे। सरकार की दृष्टि '2022 तक सभी के लिए आवास' को साकार करने की दिशा में डीएचएफएल गृह उत्सव एक नेक पहल है । इस प्रदर्शनी में कोई प्रवेश शुल्क नहीं है।

उदयपुर में डीएचएफएल गृह उत्सव ना केवल प्रतिस्पर्धी ब्याज दरों की पेशकश करेगा बल्कि ग्राहकों के गृह ऋण को स्पॉट मंजूरी और प्रोसेसिंग फीस पर आकर्षक डिस्काउंट की पेशकश भी करेगा। अधिकांश आवास इकाइयों को प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत कवर किया जाएगा।

शिविर में 436 रोगियों का उपचार

उदयपुर। पेसिफिक सेन्टर ऑफ न्यूरो साइन्सेस द्वारा लकवा, मस्तिष्क एवं मिर्गी रोगियों के लिए दो दिवसीय चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया जिसमें 436 रोगियों को जांच एवं परामर्श दिया गया। पीएमसीएच के चेयरमेन राहुल अग्रवाल ने बताया कि पेसिफिक सेन्टर ऑफ न्यूरो साइन्सेस ने पिछले दो सालों में मस्तिष्क एवं लकवा रोगों के इलाज में देश के अग्रणी न्यूरो सेन्टर के रूप में पहचान बनाई है। यहां जल्द ही मिर्गी एवं अन्य मस्तिष्क रोगों की सम्पूर्ण चिकित्सा उपलब्ध कराई जाएगी।

शिविर में पीसीएनएस के इंटरवेंशनल न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अतुलाभ वाजपेयी, डॉ. नरेन्द्रमल, डॉ. पंकज गॉधी, डॉ. राजेश खोइवाल, डॉ. राहुल पाठक एवं अमेरिका से बच्चों के मिर्गी रोगों में फेलोशिप प्राप्त डॉ. कल्याणी करकरे ने लकवा, माइग्रेन, मिर्गी, चक्कर आना, सिरदर्द, कमर दर्द सिर की चोट, हाथ पैरों में झनझनाहट, ब्रेन ट्यूमर, स्लिप डिस्क एवं सिर में पानी भरना आदि बीमारियों के मरीजों की जांच कर परामर्श दिया।

जिंक द्वारा 15 जीईटीज सम्मानित

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक विश्व की बेस्ट माईनिंग टेक्नोलॉजी, इनोवेटिव, डिजिटाईजेशन तथा ग्रोईंग कंपनी के साथ-साथ इसमें डायनमिक क्लचर है। नवनियुक्त इंजीनियर्स को यहां जैसी स्वतंत्रता कहीं भी नहीं मिलेगी। ये विचार जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने नवनियुक्त जीईटी के कॉन्वोक्शन कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने नवनियुक्त इंजीनियरों से आह्वान किया कि वे विश्व स्तरीय तकनीक से परिचित होकर हिन्दुस्तान ज़िंक में उसे अपनाएं। कॉन्वोक्शन कार्यक्रम के दौरान श्रेष्ठ 15 परफोरमर्स को प्रमाण पत्र एवं पदक प्रदान किये गये।

इस अवसर पर जीईटी साहिली राण्डे, मेटलर्जीकल इंजीनियर ने अपने अनुभव शेयर करते हुए कहा कि इस ट्रेनिंग के दौरान सभी लोकेशन्स पर अच्छे अध्यापकों, गाईड एवं वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में बहुत कुछ सीखने को मिला जो खनन क्षेत्र में कार्य करने के लिए हमेशा उपयोगी होगा। माईनिंग इंजीनियर हिमांशु जैन ने कहा कि जिंक़ में न सिर्फ तकनीकी ज्ञान बल्कि व्यावहारिक ज्ञान भी सीखने को मिला जो कि महत्वपूर्ण है।

मिनल को पीएच.डी.

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कॉमर्स कॉलेज से बैंकिंग एवं व्यवसायिक अर्थशास्त्र विभाग की ओर से मिनल सामर को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। मिनल ने प्रो. रेणु जटाना के मार्गदर्शन में 'भारतीय आभूषण उद्योग में सामाजिक, नैतिक ब्रांडिंग और गैर ब्रांडिंग मामलों के संबंध में ग्राहक के मनोविज्ञान और आचरण का एक अध्ययन' विषय पर शोध किया।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 100 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं–

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में किरणबाला सम्मानित

सृजनगाथा डॉट कॉम रायपुर, द्वारा 1-8 जून तक मॉस्को व सेंट पीटरबर्ग्स में आयोजित 15वें अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में उदयपुर की साहित्यकार किरणबाला जीनगर ने मेवाड़ का प्रतिनिधित्व किया। किरणबाला ने काव्यपाठ के साथ ही विभिन्न साहित्यिक सत्रों का संचालन एवं संयोजन भी किया। इस अवसर पर किरणबाला को नोबल पुरस्कार प्राप्त रूसी लेखिका आन्ना अख़्मातवा सम्मान से नवाज़ा गया।

विनोद तेयुप अध्यक्ष बने

उदयपुर। तेरापंथ युवक परिषद का वार्षिक अधिवेशन रविवार को यहां नाइयों की तलाई स्थित तेरापंथ भवन में संपन्न हुआ। चुनाव अधिकारी राजकुमार फत्तावत ने आगामी दो वर्ष के लिए अध्यक्षीय चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ की। इसमें दो प्रत्याशी चुनाव मैदान में थे। एक विनोद चंडालिया व दूसरे अजीत छाजेड़। सुबह 11.45 से दोपहर 1.15 बजे तक मतदान की प्रक्रिया हुई जिसमें कुल 289 लोगों ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। इसमें विनोद चंडालिया ने अजीत छाजेड़ को 19 वोटों से शिकस्त दी। चुनाव अधिकारी द्वारा विजेता की घोषणा पर समर्थकों ने श्री चंडालिया का मालाओं से अभिवादन किया। उल्लेखनीय है कि विनोद चंडालिया तेरापंथ युवक परिषद में 15 वर्ष से सर्किय होकर चार अलग-अलग पदों पर रह चुके हैं तथा 10 वर्षों से लगातार कार्यसमिति सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। श्री चंडालिया के विजयी होने पर चुनावी प्रबंधन टीम के संयोजक अभिषेक पोखरना, विनोद मांडोत, राजकुमार कच्छारा, राकेश नाहर, मुकेश कच्छारा, करण बेद ने प्रसन्नता जताई है।

एडसिल इंडिया द्वारा नारायण सेवा को 12 सीटर वाहन भेंट

उदयपुर। भारत सरकार के उद्यम, एडसिल इंडिया लिमिटेड ने दिव्यांग लोगों के आवागमन को सुगम बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान को एक बहुउद्देश्यीय वाहन, टाटा विंगर प्रदान किया। इस अवसर पर एडसिल इंडिया के सीएमडी दीप्तिमान दास और नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के पदाधिकारी उपस्थित थे।

एडसिल इंडिया के सीएमडी दिप्तिमान दास ने कहा कि आज हम एक ऐसे रोमांचक दौर से गुजर रहें हैं जहां 75 प्रतिशत लोग सामाजिक क्षेत्र पर, विशेष रूप से शिक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं परन्तु हम देश की सेवा करने एवं समाज उन्नति में भी विश्वास भाव रखते हैं। हमने सोचा कि हमें दिव्यांग लोगों को सशक्त बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान का सहयोग करना चाहिए। हम चाहते हैं कि हमारी यह छोटी-सी कोशिश उनके जीवन को सुगम बनाए और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करे।

12 दिव्यांग लोगों के साथ टाटा विंगर को एडसिल इंडिया की टीम और पद्मश्री कैलाश 'मानव' की टीम ने हरी झड़ी दिखाकर उदयपुर शहर की पहली यात्रा पर रवाना किया। इस अवसर पर करीब 500 अन्य लोग और 300 दिव्यांग बन्धु साक्षी थे।

नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि हम खुशकिस्मत हैं कि हमें ऐसे कॉर्पोरेट दानदाताओं का साथ मिला है, जो संगठन के भीतर सामाजिक सेवा की भावनाओं को पोषित और पल्लवित कर रहे हैं और जो शोषित और वंचित समुदायों के जीवन में उम्मीद की किरण जगा रहे हैं। हम एडसिल

इंडिया के आभारी हैं, जिसने नारायण सेवा संस्थान के परिसर में आने वाले असक्षम लोगों, रोगियों, अनाथ बच्चों और आदिवासी लोगों के स्कूल जाने वाले बच्चों के जीवन की राह को आसान बनाने का महती काम किया है। इस तरह उन्होंने समाज में दूसरे लोगों के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

उल्लेखनीय है कि नारायण सेवा संस्थान भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, यूक्रेन, ब्रिटेन और यूएसए में रहने वाले और पोलियो और सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित शारीरिक रूप से विकलांग रोगियों और जन्म-जात विकलांगता से पीड़ित लोगों के लिए उम्मीद की एक किरण बनकर उभरा है। नारायण सेवा संस्थान ने पिछले 30 वर्षों में 3.5 लाख से ज्यादा मरीजों का ऑपरेशन कर उन्हें चिकित्सा सेवाओं, दवाइयों और प्रौद्योगिकी का निशुल्क लाभ देकर पूर्ण सामाजिक-आर्थिक सहायता प्रदान की है। किसी भी प्रकार के शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक पुनर्वास के लिए नारायण सेवा संस्थान आने वाले मरीजों को यहां किसी भी नकद काउंटर या भुगतान गेटवे से गुजरना नहीं होता। संस्थान में 1100 बिस्तरों वाला अस्पताल है जहां 125 डॉक्टरों और नर्सिंग स्टाफ की एक टीम प्रतिदिन लगभग 95 रोगियों का ऑपरेशन करते हुए मानवता की सेवा में जुटी है।

समाज के मेधावी बच्चों को आगे बढ़ाएं : कटारिया

-जैन सोश्यल ग्रुप अर्हम की नवीन कार्यकारिणी ने ली शपथ-

उदयपुर। जैन समाज ने हमेशा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। अब वक्त आ गया है कि समाज को भी अल्पसंख्यकों की योजनाओं का लाभ उठाकर अपने मेधावी बच्चों को आगे बढ़ाना होगा। डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक साधारण परिवार में जन्मे और अपनी मेहनत के दम पर उच्च मुकाम पाया। हमें भी सामाजिक स्तर पर अपनी प्रतिभाओं को सभी संसाधन उपलब्ध करवा कर उन्हें सफलता के शिखर तक पहुंचाना है। ये विचार गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने महापज्ञ विहार में आयोजित जैन सोश्यल ग्रुप अर्हम की नवीन कार्यकारिणी के शपथ समारोह में व्यक्त किए। इस अवसर पर कटारिया ने जैन सोश्यल ग्रुप अर्हम की नई कार्यकारिणी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। स्वागत उद्बोधन जेएसजी अर्हम के सचिव अर्जुन खोखावत ने दिया।

ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष आलोक पगारिया ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि जैन सोशल ग्रुप अर्हम की स्थापना बंधुत्व से प्रेम, बंधुत्व से सेवा, बंधुत्व से व्यापार के उद्देश्यों को लेकर की गई है। जब भी समाज में अन्याय जैसी कोई बात होगी, असमानता की कोई स्थिति आएगी तो जैन सोशल ग्रुप अर्हम के सभी सदस्य एकजुट होकर उसकी

पालना करेंगे। सामूहिक गुरु दर्शन के लिए चेन्नई व सिरियारी में महाश्रमणजी के दर्शनार्थ समूह जाएगा। इसी माह सिरियारी में भक्ति संध्या का आयोजन किया जाएगा।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए महापौर चंद्रसिंह कोठारी ने कहा कि हमें बच्चों को अच्छी तालीम देकर आगे बढ़ाना है। माला तभी अच्छी लगती है जब उसमें सभी प्रकार के फूल हों, सभी संगठनों को एक होकर कार्य करना है। मैंने भी पारिवारिक आयोजनों में 21 से अधिक व्यंजन नहीं बनाने का संकल्प पूरा किया है। जेएसजीआईएफ के पूर्व अंतराष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश जैन ने उद्बोधन दिया। शपथ समारोह के प्रथम चरण में कार्यकारिणी ने शपथ ली व उसके बाद पदाधिकारियों ने शपथ ली। विशिष्ट अतिथि जेएसजीआईएफ के पूर्व अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश जैन, मेवाड़ रीजन के चेयरमैन ओ.पी. चपलोत एवं संयुक्त आयकर आयुक्त ओ.पी. कांठेड़ थे। कार्यक्रम संयोजक ओपी डोसी ने बताया कि तेरापंथ समाज के हाल ही में सम्पन्न हुए चुनाव में नवनिर्वाचित अध्यक्ष सूर्यप्रकाश मेहता का अतिथियों ने अभिनंदन किया।

उन्होंने कहा कि सबको साथ लेने की भावना रखें। जेएसजी सदस्यों ने मंगलाचरण किया व अतिथियों का स्वागत माला, पगड़ी, उपरना व मोमेंटो द्वारा किया गया। इस अवसर पर थली समाज के सामूहिक गीत बजरंग सामसुरता एवं कमल नाहटा व टीम ने प्रस्तुत किया। जयपुर से पधारे राकेश जैन, समूह के उपाध्यक्ष राज सुराणा, मेवाड़ रीजन के प्रथम चेयमैन ओपी चपलोत आदि मौजूद थे।

कान्यो-मान्यो

ब्याव रा अजूबा-गजूबा

जळम मरण तो कींरै हाथ में नीं पण जीवधारी जो भी है वींरो परण जरूरी है। सै जीवां आपणो कुनबो बढ़ावण खातर यो संसकार मानै। जीवण री सारथकता भी या ही है। कान्यो आज री चोपाळ माथै भाखै कै केई जात्यां मांय मरियोड़ा री कुंडळी मिलाय ब्याव रचै जद वांरी मुगती मानै। मान्यो गाबड़ हळावतो रै।

कान्यो बोल्यो कै करनाटक मांय कन्नूर अंचळ रै शिया, कोप्पला, मविला समुदाय मांय मरियोड़ा रै रिश्तेदारां रौ ब्याव वांरी कुंडळी रौ मिलाण कर वांरा पुतळा बणा'र सजावै नै रिश्तेदारां नै नूत नै परणावै। कम उमर मांय मरियोड़ा रा दूल्हा रा समधी कपड़ा लत्ता लै'र दुल्हण रै घरै जावै जठै दोयां रा पुतळा सजाय वांरौ ब्याव करै।

मान्यो या वात सुण अचम्बो करै। जदी कान्यो दूजी वात कै। मध्यप्रदेस री गोंड जनजाति मांय कुंवारपण में बाळकी प्रेम करै पण वींरै घरआळा राजी नीं वै तो छोरी भाग जावै। छोरा रै घरै लाडो एक लोठ्यौ पाणी री धार छापर स्यूं लाड़ी रै माथै नाकै पछै गाम रा पंच वीं रै बाप नै खबर करै जदी वां पांऊ खरची लै दोयां रा भांवर वै जावै। इण रै अलावा ई जात मांय पठौनी, चढ़, लमसना जेड़ी परथा मंडवातरी ब्याव कैवा। पठौनी मांय लाड़ी री वरात जावै। चढ़ मांय लाड़ो जावै। तमसना मांय ब्याव पैली छोरो छोरी रै घरे रैय घर जंगळ नै खेत रौ काम संभाळै। राजी व्है जाय तो दोयां रौ ब्याव हुय जावै। कंवर जात मांय यो ब्याव परजण अर बिंवार मांय घरंजियौ केवावै।

मान्यो मानग्यौ कान्या रौ सिक्को। आप भळेई कंवारो है पण पख्योड़ा रै हवस री खबरां जोरदार राखै। वौ फैर सुणावै भीलां मांय छोरी ने भगाय गुपत जगां लै जावै। पछै खबर दै जदी छोरो आपणे गाम आवै नै पंचपंचात वाळा मिलार छोरी रै घरै हमचो दै। एक लमझना परमा वै। ई मांय छोरी रौ बाप छोरो पसंद कर घरै लावै।

बरस भर राखै। छोरी रौ गरभ बणै तो ब्याव करै नीं तो भगावै परो आगे। बिंझवार जात मांय गुरावर परथा में दो जणा आपस मांय आपणी-आपणी बैनां परणै। चूड़ी मांय मर्यां पछै छोटो भाई भाभी नै चूड़ी पैराण ब्याव करै। मंगणी हुआं छोरी परणै वींनै बूंदा ब्याव केवै। जबरण कींरै घर मांय घुस छोरी ब्याव करै वो पेठू ब्याव अर कोई छोरो भगार गाम मांय आर रैवण चावै तो गामवाळा री रजामंदी सूं होवणवाळो ब्याव डेढ़रियो वाजै।

मान्यो केई तरै रा विचार करण लागग्यौ। बौल्यो कै कान्या भाई, थारी वातस्यूं लागै कै कंवारा रौ जळम विरथो है। जळम लीधां पछै ब्याव नीं करै वो छोरो वो चावै छोरी, दोयां रो जळम फिजूळ है।

श्रीनाथ जगन्नाथ उत्सव का दो दिवसीय अनूठा आयोजन

उदयपुर में पहलीबार श्रीनाथ जगन्नाथ महोत्सव के आयोजन ने अपनी यादगार प्रस्तुतियों से विशिष्ट छाप छोड़ी। पहले दिन 9 जून को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पंडित चेतन जोशी का बांसुरी वादन, देबाशीष अधिकारी का तबला वादन, कबिता मोहंती एवं गुरूदुर्गाचरण रणबीर की कृष्णलीला पर आधारित नृत्यनाटिका तथा अलवर के कलाकार राजू सैनी की कृष्णरास ने सबको सम्मोहित कर दिया। इस अवसर पर क्लासिकल डांस का बेस्ट स्टेज अवार्ड दिल्ली के श्याम पिया कला संस्थान को, बेस्ट कोरियोग्राफी का मनोरंजन नायक को, बेस्ट म्यूजिक का अवार्ड उदयपुर के कत्थक आश्रम को प्रदान किया गया।

दूसरे दिन के प्रदर्शन में उड़ीसा के संगीत पर राजस्थानी कलाकारों और राजस्थान के संगीत पर उड़ीसा के कलाकारों ने समा बांध दिया। मुख्य अतिथि हिन्दुस्तान ज़िंक के निदेशक अखिलेश जोशी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति आई.वी. त्रिवेदी, उपनिदेशक पर्यटन सुनीता सरोच, सीएसआर मेहता, अमेरिकन हॉस्पीटल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आनंद झा, मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं विश्वास संस्थान के निदेशक डॉ. जेके छापरवाल, राजसमंद अरबन कॉपरेटिव बैंक के चेयरमेन मुरलीधर भाटिया एवं वेस्ट जोन कल्चर सेंटर उदयपुर के कार्यक्रम अधिकारी तनेराज सिंह सोढ़ा थे।

लोकनृत्यों के लिए श्रीनाथ जगन्नाथ अवार्ड हेतु प्रतियोगिता में राजस्थान के अलवर से आए मनीष मेहता एवं दल ने कालिये ने कर दिया लाल, आसाम से आए कलाकारों ने बिहू नृत्य की प्रस्तुति दी जो आसाम में फसल कटाई के वक्त किया जाता है। इसके बाद राजस्थान और ओडिशा के फ्यूजन में श्रीनाथजी और जगन्नाथजी के स्वरूपों को साकार करते हुए कालबेलिया, घूमर नृत्य एवं संगीतमयी प्रस्तुति से श्रीनाथ जगन्नाथ फेस्टिवल कम कॉम्पीटीशन की थीम को चरितार्थ कर दिया।

समारोह के सफलतम आयोजन के लिए विश्वास संस्थान के परियोजना निदेशक शेखर कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

नृत्याभिनय संस्थान की फाउंडर-डायरेक्टर श्रीमती कबिता मोहंती ने बताया कि इस उत्सव में दिल्ली, कोटा, अलवर, उड़ीसा और आसाम से आएं करीब 15 लोककलाकारों और भारतीय शास्त्रीय संगीत के दलों ने प्रस्तुति दी एवं 100 से अधिक प्रतिभाओं ने भाग लिया।

स्मृतिशेष हुए अम्बू शर्मा

राजस्थानी 'नैणसी' के सम्पादक के रूप में ख्यात कोलकाता प्रवासी, राजस्थान के अम्बू शर्मा (84) बुधवार 6 जून को हम सबसे विदा ले स्मृतिशेष हो गए। उनके लिखे अनेक पत्रों को टटोलता हूं तो पहला पत्र 27 नवम्बर 1983 का है लेकिन नैणसी में इसके 15-20 वर्ष पूर्व ही मैं छप गया था सो परिचय का सिलसिला और पीछे का है। वे प्राय: पोस्टकार्ड ही लिखते। एक कम पड़ता तो उसी के साथ दूसरा, तीसरा लिखते।

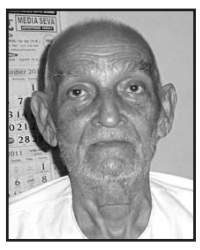

वे मित्रों के लेखन को जहां कहीं पढ़ते, जहां कहीं उनके समाचार छपते, जहां कहीं उनकी पुस्तक देखते तुरन्त चिट्ठी लिखकर अपनी बेबाक टीप, टिप्पणी, राय, सुझाव लिख देते। कोई चीज गलत लगती तो भी तुरन्त लिख देते। नैणसी वे मुझे लगातार भेजते और उसमें लिखने का आग्रह भी करते रहते। मैं भी उन्हें अपने द्वारा सम्पादित रंगायन, लोककला, पीछोला, सुलगते प्रश्न आदि भेजता। प्रकाशन भी भेजता। वे भी अपने प्रकाशन भेजते। कोई लेखक राजस्थानी साहित्य के इतिहास के बारे में कुछ लिखता और उनके या अन्य किसी के योगदान का वांछित उल्लेख नहीं करता तो वे अपनी सख्त नाराजगी व्यक्त करते। हल्ला मचा देते। इसे वे अपने हक की लड़ाई समझते। यहां तक कि गलती स्वीकार करने को बाध्य कर देते।

उनका लिखा एक पत्र जो मुझे सदैव याद रहेगा। वह मेरी मृत्यु की सूचना का ही पत्र था जो शनिवार 10 सितम्बर 2005 को लिखा था। मैं वह पूरा पत्र ही यहां दे रहा हूं।

।। श्री हरि :।।

सादर अभिवादन

रात्रि में टीवी में देखा कि ''प्रसिद्ध साहित्यकार महेन्द्रजी भानावत का निधन हो गया''- अत्यंत मार्मिक वेदना हुई जैसे सहोदर और साहित्य-मार्गदर्शक ही चला गया हो। सदा से ही अर्थात् पांच दशकों से भी अधिक से वे भातृवत थे। वे भाषा परिषद में पुरस्कार लेने कलकत्ता पधारे थे 35 वर्ष पूर्व ; तब 2-3 दिवस मैं साथ ही था। फिर उनके बहाने से ही अनुज (नहीं अग्रज) नरेन्द्रजी ने कलकत्ते के जैन सम्मेलन में मुझे भी, अनेक जैन पंडितों के संग, अतिथिशाला (सरदारमलजी कांकरिया की विशाल कोठी, 2 क्वींस पार्क, कोलकाता- 19) में तीन-दिन (रात-दिवस) वहीं अपने साथ रखा। खाना, पीना, भोजन-चाय सभी उनके साथ ही होता था। मैं उदयपुर दो बार आया, 2-3 मार्च 1959 को भूपाल कॉलेज में बी.ए. परीक्षा में भूगोल विषय में प्रेक्टीकल परीक्षा देने। पुन: झुंझुनू से एक मास पश्चात आया बी.ए. के सभी प्रश्नपत्रों की परीक्षा देने और संपूर्ण अप्रैल माह ठहरा। होली भी वहीं की हुई। इंटर एवं मैट्रिक परीक्षा के बीच में होली क्रमश: नवलगढ़ और सीकर में हुई थी। नरेन्द्रजी के स्मृति ग्रंथ में मेरी कविता भी छापी थी उन्होंने। मन था कि जयपुर में नरेन्द्रजी के घर जाता किंतु हो नहीं पाया यद्यपि मैं जयपुर 2000 से 2004 तक की पांचों फरवरी में 15-20 दिन रहा 15 पटेल नगर झोंटवाड़ा में ठहरा था। पास में ही कल्याणसिंह राजावत का चिड़ावा हाउस है, 53 शिल्प कोलोनी में जहां नित्य संध्या गोष्ठी जुड़ती थी। सावधानीपूर्वक उनका चित्र और जीवनी भेजदें। बेसी सामग्री जोड़ पाएंगे तो नैणसी का संपूर्ण ''महेन्द्रजी भानावत स्मृति विशेषांक'' ही छाप लूंगा। पत्राचार द्वारा संपर्क, निरंतर बनाए रखें।

शुभेच्छु

अम्बू शर्मा

अम्बूजी ने मैत्री-रिश्तों का निर्वाह कभी दिखावटी नहीं किया। अंबूजी की तरह ही वहां रह रहे रतन शाह ने भी राजस्थानी प्रचारिणी सभा की स्थापना कर राजस्थानी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के उन्नयन, विकास, संरक्षण और प्रचार-प्रसार का संकल्पपूर्वक बीड़ा उठाया हुआ है। उनका अंबूजी से सर्वाधिक सर्वसम्मत नैकट्य रहा। जब मैंने अंबूजी पर उन्हें कुछ लिखने को कहा तो अपनी भर्राई आवाज में बोले, अभी तत्काल तो संभव नहीं होगा। अपनी सभा-संस्था के माध्यम से उन्होंने शोकसभा भी आयोजित की।

जब तुक्तक ने शब्द रंजन पाक्षिक शुरू किया तो उसे नियमित अम्बूजी को भेजता रहा। अम्बूजी हर अंक प्राप्ति की सूचना देते। लिखते भी कि जो काम मैं नैणसी के माध्यम से नहीं कर पाया, उसे शब्द रंजन कर रहा है। उन जैसे सहृदय, मित्र, मार्गदर्शक और अपनी भाषा, अपने साहित्य, अपनी संस्कृति और अपनों के प्रति अपनापा देने वाले सुधीजन अब बहुत कम हैं। शब्द रंजन परिवार उनके शोक संतप्त परिजनों के साथ उनकी आत्मा की शान्ति की कामना लिए है।

ऑपरेशन द्वारा 100 से अधिक पथरियां निकाली

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के गेस्ट्रोएंट्रोलोजिस्ट डॉ पंकज गुप्ता ने 46 वर्षीय रोगी की पित्त की नली का दूरबीन से ऑपरेशन कर उसमें से 100 से अधिक पथरियां निकाल रोगी को स्वस्थ किया।

डॉ. गुप्ता ने बताया कि गौतमलाल पिछले दो महीने से पेट में दर्द, पीलिया एवं बुखार से पीड़ित था। सोनोग्राफी व एंडोस्कोपी की जांच से पता चला कि उसकी पित्त की नली में पथरी है और पित्त की नली फूल कर लगभग 25 मिलीमीटर तक हो गई थी। सभी पथरियां 5 से 10 मिलीमीटर के आकार की थी। यदि इसमें से कोई भी पथरी पित्त की नली का रास्ता रोक दे, तो पूरे शरीर में ज़हर फैल सकता है या पूरा शरीर संक्रमित हो सकता है जिससे मृत्यु की संभावना अत्यधिक बढ़ जाती है। एक एंडोस्कोप को मुँह द्वारा छोटी आंत में डाल कर सारी पथरी को मल द्वार से बाहर निकाल लिया गया। रोगी अब स्वस्थ है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।